

رُبَمَا يَوَدُّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْ كَانُوا مُسْلِمِينَ ﴿٢﴾					
2	मुसलमान	काश वह होते	वह लोग जो काफिर हुए	आजू करंगे	बसा औकात
ذُرُّهُمْ يَأْكُلُوا وَيَتَمَتَّعُوا وَيُلْهِهِمُ الْأَمَلُ فَسَوْفَ					
पस अनकरीब	उम्मीद	और गफूलत में रखे उन्हें	और फाइदा उठा लें	वह खाएं	उन्हें छोड़ दो
يَعْلَمُونَ ﴿٣﴾ وَمَا أَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ إِلَّا وَلَهَا كِتَابٌ					
एक लिखा हुआ	उस के लिए	मगर	बस्ती	किसी	हम ने हलाक किया और नहीं 3 वह जान लेंगे
مَّعْلُومٌ ﴿٤﴾ مَا تَسْبِقُ مِنْ أُمَّةٍ أَجَلَهَا وَمَا يَسْتَأْخِرُونَ ﴿٥﴾					
5	वह पीछे रहते हैं	और न	अपना मुक़ररा वक़्त	कोई उम्मत	न सबक़त करती है 4 मुक़ररा वक़्त
وَقَالُوا يَا أَيُّهَا الَّذِي نُزِّلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ إِنَّكَ لَمَجْنُونٌ ﴿٦﴾					
6	दीवाना	वेशक तू	याद दिहानी (कुरआन)	उस पर	वह जो कि उतारा गया ऐ वह और वह बोले
لَوْ مَا تَأْتِيَنَا بِالْمَلِكَةِ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِينَ ﴿٧﴾ مَا نُنَزِّلُ					
हम नाज़िल नहीं करते	7	सच्चा	से	तू है	अगर फ़रिश्तों को हमारे पास तू नहीं ले आता क्यों
الْمَلِكَةَ إِلَّا بِالْحَقِّ وَمَا كَانُوا إِذَا مُنْظَرِينَ ﴿٨﴾ إِنَّا نَحْنُ					
हम	वेशक	8	मोहलत दिए गए	उस वक़्त	और न होंगे हक़ के साथ मगर फ़रिश्ते
نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَفِظُونَ ﴿٩﴾ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مِنْ					
से	और यकीनन हम ने भेजे	9	निगहवान	उस के	और वेशक हम याद दिहानी (कुरआन) हम ने नाज़िल किया
قَبْلِكَ فِي شَيْعِ الْأَوَّلِينَ ﴿١٠﴾ وَمَا يَأْتِيهِمْ مِنْ رَّسُولٍ إِلَّا					
मगर	कोई रसूल	और नहीं आया उन के पास	10	पहले	गिरोह में तुम से पहले
كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ﴿١١﴾ كَذَلِكَ نَسْلُكُهُ فِي قُلُوبِ الْمُجْرِمِينَ ﴿١٢﴾					
12	मुज़्रिमों	दिल (जमा)	में	हम उसे डाल देते हैं	उसी तरह 11 इस्तिहज़ा करते उस से वह थे
لَا يُؤْمِنُونَ بِهِ وَقَدْ خَلَتْ سُنَّةُ الْأَوَّلِينَ ﴿١٣﴾ وَلَوْ فَتَحْنَا					
हम खोल दें	और अगर	13	पहले	रस्म - रविश	और पड़ चुकी है उस पर वह ईमान नहीं लाएंगे
عَلَيْهِمْ بَابًا مِنَ السَّمَاءِ فَظَلُّوا فِيهِ يَعْرُجُونَ ﴿١٤﴾ لَقَالُوا إِنَّمَا سُبُكَّتْ					
बान्ध दी गई	इस के सिवा नहीं	तो कहेंगे	14	चढ़ते	उस में वह रहें आस्मान से कोई दरवाज़ा उन पर
أَبْصَارُنَا بَلْ نَحْنُ قَوْمٌ مَسْحُورُونَ ﴿١٥﴾ وَلَقَدْ جَعَلْنَا فِي السَّمَاءِ					
आस्मान	में	और यकीनन हम ने बनाए	15	सिहर ज़दह	लोग हम बल्कि हमारी आँखें
بُرُوجًا وَزَيَّنَّهَا لِلنَّظِيرِينَ ﴿١٦﴾ وَحَفِظْنَاهَا مِنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ					
शैतान	हर	से	और हम ने हिफ़ाज़त की उस की	16	देखने वालों के लिए और उसे ज़ीनत दी बुर्ज (जमा)
رَّجِيمٍ ﴿١٧﴾ إِلَّا مَنْ اسْتَرَقَ السَّمْعَ فَاتَّبَعَهُ شَهَابٌ مُبِينٌ ﴿١٨﴾					
18	चमकता हुआ	शोला	तो उस का पीछा करता है	सुनना	चोरी करे जो मगर 17 मर्दूद

वाज़ औकात काफिर आज़ू करंगे काश वह मुसलमान होते! (2) उन्हें छोड़ दो, वह खाएं और फाइदा उठा लें, और उम्मीद उन्हें गफूलत में डाले रखे, पस अनकरीब वह जान लेंगे। (3) और नहीं हलाक किया हम ने किसी बस्ती को, मगर उस के लिए एक लिखा हुआ वक़्त मुक़रर था। (4) न कोई उम्मत सबक़त करती है अपने मुक़ररा वक़्त से, और न वह पीछे रहते हैं। (5) और वह (काफिर) बोले ऐ वह शख्स जिस पर कुरआन उतारा गया है वेशक तू दीवाना है, (6) तू हमारे पास फ़रिश्तों को क्यों नहीं ले आता? अगर तू सच्चों में से है। (7) हम नाज़िल नहीं करते फ़रिश्ते मगर हक़ के साथ, और वह उस वक़्त मोहलत न दिए जाएंगे। (8) वेशक हम ही ने कुरआन नाज़िल किया और वेशक हम ही उस के निगहवान हैं। (9) और यकीनन हम ने तुम से पहले गिरोहों में (रसूल) भेजे, (10) और उन के पास कोई रसूल नहीं आया मगर वह उस से इस्तिहज़ा करते थे। (11) उसी तरह हम उसे डाल देते हैं मुज़्रिमों के दिलों में। (12) वह इस (कुरआन) पर ईमान नहीं लाएंगे, और यह पहलों की रस्म पड़ चुकी है। (13) और अगर हम उन पर आस्मान का कोई दरवाज़ा खोल दें, और वह उस में (दिन भर) चढ़ते रहें। (14) तो (यही) कहेंगे कि इस के सिवा नहीं कि हमारी आँखें बान्ध दी गई हैं (हमारी नज़र बन्दी कर दी गई है) बल्कि हम सिहर ज़दह हैं। (15) और यकीनन हम ने आस्मानों में बुर्ज बनाए और उसे देखने वालों के लिए ज़ीनत दी, (16) और हम ने हर मर्दूद शैतान से उस की हिफ़ाज़त की, (17) मगर जो चोरी कर के (चोरी से) सुन ले, तो चमकता हुआ शोला उस का पीछा करता है। (18)

और हम ने ज़मीन को फैला दिया, और हम ने उस पर पहाड़ रखे, और उस में हर चीज़ मुनासिब उगाई। (19)

और हम ने तुम्हारे लिए इस में रोज़ी रोटी के सामाने बनाए (और उस के लिए भी) जिसे तुम रिज़्क देने वाले नहीं। (20)

और कोई चीज़ नहीं जिस के ख़ज़ाने हमारे पास न हों, और हम नहीं उतारते मगर एक मुनासिब अन्दाज़े से। (21)

और हम ने हवाएं भेजी (पानी से) भरी हुई, फिर हम ने आस्मान से पानी उतारा, फिर वह हम ने तुम्हें पिलाया, और तुम उस के ख़ज़ाने (जमा) करने वाले नहीं। (22)

और वेशक हम (ही) ज़िन्दगी देते हैं, और हम ही मारते हैं, और हम ही वारिस हैं। (23)

और तहकीक़ हमें मालूम है तुम में से आगे गुज़र जोने वाले, और तहकीक़ हमें मालूम है पीछे रह जाने वाल। (24)

और वेशक तेरा रब (ही) उन्हें (रोज़े कियामत) जमा करेगा, वेशक वह हिक्मत वाला, इल्म वाला है। (25)

और तहकीक़ हम ने इन्सानों को पैदा किया एक खनकनाते हुए, सियाह सड़े हुए गारे से। (26)

और जिनों को उस से पहले हम ने वे धुएँ की आग से पैदा किया। (27)

और जब तेरे रब ने फ़रिशतों से कहा वेशक मैं इन्सान को बनाने वाला हूँ, एक खनकनाते हुए सियाह सड़े हुए गारे से। (28)

फिर जब मैं उसे दुरुस्त कर लूँ, और उस में अपनी रूह फूँक दूँ तो तुम उस के लिए सिज्दे में गिर पड़ो। (29)

पस सिज्दा किया सब के सब फ़रिशतों ने, (30)

इब्लीस के सिवा। उस ने (उस से) इन्कार किया कि वह सिज्दा करने वालों के साथ हो। (31)

अल्लाह ने फ़रमाया, ऐ इब्लीस!

तुझे क्या हुआ? कि तू सिज्दा करने वालों के साथ न हुआ। (32)

उस ने कहा मैं (वह) नहीं हूँ कि सिज्दा करूँ इन्सान को, तू ने उस को खनकनाते हुए सियाह सड़े हुए गारे से पैदा किया है। (33)

وَالْأَرْضَ مَدَدْنَاهَا وَأَلْقَيْنَا فِيهَا رَوَاسِيَ وَأَنْبَتْنَا فِيهَا

और ज़मीन	हम ने उस को फैला दिया	और हम ने रखे	उस में (पर)	पहाड़	और हम ने उगाई	उस में
----------	-----------------------	--------------	-------------	-------	---------------	--------

مِنْ كُلِّ شَيْءٍ مَّوْزُونٍ ﴿١٩﴾ وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيهَا مَعَايِشَ وَمَنْ

से	हर शै	मौजू	19	और हम ने बनाए	तुम्हारे लिए	उस में	सामाने मईशत	और जो - जिस
----	-------	------	----	---------------	--------------	--------	-------------	-------------

لَسْتُمْ لَهُ بِرَازِقِينَ ﴿٢٠﴾ وَإِنْ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا عِنْدَنَا خَزَائِنُهُ وَمَا

तुम नहीं	उस के लिए	रिज़्क देने वाले	20	और नहीं	कोई चीज़	मगर	हमारे पास	उस के ख़ज़ाने	और नहीं
----------	-----------	------------------	----	---------	----------	-----	-----------	---------------	---------

نُنَزِّلُهُ إِلَّا بِقَدَرٍ مَّعْلُومٍ ﴿٢١﴾ وَأَرْسَلْنَا الرِّيْحَ لَوَاقِحَ فَأَنْزَلْنَا

हम उस को उतारते	मगर	अन्दाज़े से	मालूम - मुनासिब	21	और हम ने भेजी	हवाएं	भरी हुई	फिर हम ने उतारा
-----------------	-----	-------------	-----------------	----	---------------	-------	---------	-----------------

مِنْ السَّمَاءِ مَاءً فَاسْقَيْنُكُمُوهُ وَمَا أَنْتُمْ لَهُ بِخَازِنِينَ ﴿٢٢﴾

से	आस्मान	पानी	फिर हम ने वह तुम्हें पिलाया	और नहीं	तुम	उस के	ख़ज़ाने करने वाले	22
----	--------	------	-----------------------------	---------	-----	-------	-------------------	----

وَأَنَّا لَنَحْنُ نُحْيِي وَنُمِيتُ وَنَحْنُ الْوَارِثُونَ ﴿٢٣﴾ وَلَقَدْ عَلِمْنَا

और वेशक हम	और	अलवत्ता हम	ज़िन्दगी देते हैं	और हम मारते हैं	और हम	वारिस (जमा)	23	हमें मालूम है	और तहकीक़ हमें
------------	----	------------	-------------------	-----------------	-------	-------------	----	---------------	----------------

الْمُسْتَقْدِمِينَ مِنْكُمْ وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَأْخِرِينَ ﴿٢٤﴾ وَإِنَّ

आगे गुज़रने वाले	तुम में से	और तहकीक़ हमें मालूम है	पीछे रह जाने वाले	24	और वेशक
------------------	------------	-------------------------	-------------------	----	---------

رَبِّكَ هُوَ يَحْشُرُهُمْ إِنَّهُ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ﴿٢٥﴾ وَلَقَدْ خَلَقْنَا

तेरा रब	वह	उन्हें जमा करेगा	वेशक वह	हिक्मत वाला	इल्म वाला	25	और तहकीक़ हम ने पैदा किया
---------	----	------------------	---------	-------------	-----------	----	---------------------------

الْإِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَإٍ مَّسْنُونٍ ﴿٢٦﴾ وَالْجَانَّ

इन्सान	से	खनकनाता हुआ	सियाह गारे से	सड़ा हुआ	26	और जिन (जमा)
--------	----	-------------	---------------	----------	----	--------------

خَلَقْنَاهُ مِنْ قَبْلُ مِنْ نَّارِ السَّمُومِ ﴿٢٧﴾ وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ

हम ने उसे पैदा किया	उस से पहले	से	आग वे धुएँ की	27	और जब	कहा	तेरा रब
---------------------	------------	----	---------------	----	-------	-----	---------

لِلْمَلَكَةِ إِنِّي خَالِقٌ بَشَرًا مِّنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَإٍ مَّسْنُونٍ ﴿٢٨﴾

फ़रिशतों को	वेशक मैं	बनाने वाला	इन्सान	से	खनकनाता हुआ	से	सियाह गारा	सड़ा हुआ	28
-------------	----------	------------	--------	----	-------------	----	------------	----------	----

فَإِذَا سَوَّيْتُهُ وَنَفَخْتُ فِيهِ مِنْ رُّوحِي فَقَعُوا لَهُ سَاجِدِينَ ﴿٢٩﴾

फिर जब	मैं उसे दुरुस्त कर लूँ	और फूँकूँ	उस में	अपनी रूह से	तो गिर पड़ो	उस के लिए	सिज्दा करते हुए	29
--------	------------------------	-----------	--------	-------------	-------------	-----------	-----------------	----

فَسَجَدَ الْمَلَكَةُ كُلُّهُمْ أَجْمَعُونَ ﴿٣٠﴾ إِلَّا إِبْلِيسَ أَبَى أَنْ يَكُونَ مَعَ

पस सिज्दा किया	फ़रिशतों	वह सब	सब के सब	30	सिवाए	इब्लीस	उस ने इन्कार किया कि	वह हो	साथ
----------------	----------	-------	----------	----	-------	--------	----------------------	-------	-----

السَّاجِدِينَ ﴿٣١﴾ قَالَ يَا إِبْلِيسُ مَا لَكَ أَلَّا تَكُونَ مَعَ السَّاجِدِينَ ﴿٣٢﴾ قَالَ

सिज्दा करने वाले	31	उस ने फ़रमाया	ऐ इब्लीस	तुझे क्या हुआ	कि तू न हुआ	साथ	सिज्दा करने वाले	32	उस ने कहा
------------------	----	---------------	----------	---------------	-------------	-----	------------------	----	-----------

لَمْ أَكُنْ لَاسْجُدَ لِبَشَرٍ خَلَقْتَهُ مِنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَإٍ مَّسْنُونٍ ﴿٣٣﴾

मैं नहीं हूँ	कि सिज्दा करूँ	इन्सान को	तू ने उस को पैदा किया	से	खनकनाता हुआ	से	सियाह गारा	सड़ा हुआ	33
--------------	----------------	-----------	-----------------------	----	-------------	----	------------	----------	----

قَالَ فَاحْرُجْ مِنْهَا فَإِنَّكَ رَجِيمٌ ﴿٣٤﴾ وَإِنَّ عَلَيْكَ							
उस ने कहा	पस निकल जा	यहां से	वेशक तू	मर्दूद	34	और वेशक	तुझ पर
اللَّعْنَةَ إِلَى يَوْمِ الدِّينِ ﴿٣٥﴾ قَالَ رَبِّ فَأَنْظِرْنِي إِلَى							
लानत	तक	रोज़े इन्साफ़	35	उस ने कहा	ऐ मेरे रब	मुझे मोहलत दे	तक
يَوْمٍ يُبْعَثُونَ ﴿٣٦﴾ قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِينَ ﴿٣٧﴾ إِلَى يَوْمِ الْوَقْتِ							
जिस दिन (मुर्दे) उठाए जाएंगे	36	उस ने कहा	वेशक तू	से	मोहलत दिए जाने वाले	37	तक दिन वक़्त
الْمَعْلُومِ ﴿٣٨﴾ قَالَ رَبِّ بِمَا أَغْوَيْتَنِي لَأُزَيِّنَنَّ لَهُمْ							
मालूम (मुकर्रर)	38	उस ने कहा	ऐ मेरे रब	जैसा कि	तू ने मुझे गुमराह किया	तो मैं ज़रूर आरास्ता करूंगा	उन के लिए
فِي الْأَرْضِ وَلَا أَغْوِيَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٣٩﴾ إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمْ							
ज़मीन में	और मैं ज़रूर गुमराह करूंगा उनको	सब	39	सिवाए	तेरे बन्दे	उन में से	
الْمُخْلِصِينَ ﴿٤٠﴾ قَالَ هَذَا صِرَاطٌ عَلَيَّ مُسْتَقِيمٌ ﴿٤١﴾ إِنَّ							
मुखलिस (जमा)	40	उस ने फ़रमाया	यह	रास्ता	मुझ तक	सीधा	वेशक 41
عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَنٌ إِلَّا مَنْ اتَّبَعَكَ							
मेरे बन्दे	नहीं	तेरे लिए (तेरा)	उन पर	कोई ज़ोर	मगर	जो - जिस	तेरी पैरवी की
مِنَ الْغَوِينَ ﴿٤٢﴾ وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمَوْعِدُهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٤٣﴾							
से	वहके हुए (गुमराह)	42	और वेशक	जहन्नम	उन के लिए वादा गाह	सब	43
لَهَا سَبْعَةُ أَبْوَابٍ لِّكُلِّ بَابٍ مِنْهُمْ جُزْءٌ مَّقْسُومٌ ﴿٤٤﴾							
उस के लिए	सात	दरवाज़े	हर दरवाज़े के लिए	उन से	एक हिस्सा	तकसीम शुदह	44
إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ﴿٤٥﴾ أُدْخِلُوها بِسَلَامٍ							
वेशक	परहेज़गार	में	वागात	और चश्मे	45	तुम उन में दाखिल हो जाओ	सलामती के साथ
أَمِينٍ ﴿٤٦﴾ وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِمْ مِّنْ غِلٍّ إِخْوَانًا عَلَىٰ							
वेखौफ़ ओ ख़तर	46	और हम ने खींच लिया	जो	में	उन के सीने	से	कीता भाई भाई पर
سُرُرٍ مُّتَقَابِلِينَ ﴿٤٧﴾ لَا يَمَسُّهُمْ فِيهَا نَصَبٌ وَمَا هُمْ مِنْهَا							
तख़्त (जमा)	आमने सामने	47	उन्हें न छुएगी	उस में	कोई तकलीफ़	और न वह	उस से
بِمُخْرِجِينَ ﴿٤٨﴾ نَبِيُّ عِبَادِي أَنِّي أَنَا الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿٤٩﴾ وَإِنَّ							
निकाले जाएंगे	48	ख़बर दे दो	मेरे बन्दों	कि वेशक	मैं	बख़शने वाला	निहायत मेहरबान 49
عَذَابِي هُوَ الْعَذَابُ الْأَلِيمُ ﴿٥٠﴾ وَنَبِّئُهُمْ عَن ضَيْفِ إِبْرَاهِيمَ ﴿٥١﴾							
मेरा अज़ाब	वह (ही)	अज़ाब	दर्दनाक	50	और उन्हें ख़बर दो (सुना दो)	से - का	मेहमान इब्राहीम (अ) 51
إِذْ دَخَلُوا عَلَيْهِ فَقَالُوا سَلَامًا قَالَ إِنَّا مِنْكُمْ وَجِلُونَ ﴿٥٢﴾							
जब	वह दाखिल हुए (आए)	उस पर (पास)	तो उन्होंने ने कहा	सलाम	उस ने कहा	हम	तुम से डरने वाले (डरते हैं) 52

अल्लाह ने फ़रमाया पस यहां (जन्मत) से निकल जा वेशक तू मर्दूद है। (34) और वेशक तुझ पर रोज़े इन्साफ़ (कियामत) तक लानत है। (35) उस ने कहा ऐ मेरे रब! मुझे उस दिन तक मोहलत दे जिस दिन मुर्दे उठाए जाएंगे। (36) उस ने फ़रमाया वेशक तू मोहलत दिए जाने वालों में से है, (37) उस दिन तक जिस का वक़्त मुकर्रर है। (38) उस ने कहा ऐ मेरे रब! जैसा कि तू ने मुझे गुमराह किया तो मैं ज़रूर उन के लिए (गुनाह को) ज़मीन में आरास्ता करूंगा, और मैं ज़रूर उन सब को गुमराह करूंगा। (39) सिवाए उन में से जो तेरे मुखलिस बन्दे हैं। (40) उस ने फ़रमाया यह रास्ता सीधा मुझ तक (आता है)। (41) वेशक वह मेरे बन्दे हैं उन पर तेरा कोई ज़ोर नहीं, मगर गुमराहों में से जिस ने तेरी पैरवी की। (42) और वेशक उन सब के लिए जहन्नम वादागाह है। (43) उस के सात दरवाज़े हैं, हर दरवाज़े के लिए उन का बांटा हुआ हिस्सा है। (44) वेशक परहेज़गार बागों और चश्मों में (होंगे)। (45) तुम उन में सलामती के साथ वेखौफ़ ओ ख़तर दाखिल हो जाओ। (46) और हम ने उन के सीनों से खींच लिए कीने, भाई भाई (बन कर) तख़्तों पर आमने सामने (बैठे होंगे)। (47) उस में उन्हें कोई तकलीफ़ न छुएगी, और न वह उस से निकाले जाएंगे। (48) मेरे बन्दों को ख़बर दे दो कि वेशक मैं बख़शने वाला, निहायत मेहरबान हूँ। (49) और यह कि मेरा ही अज़ाब दर्दनाक अज़ाब है। (50) और उन्हें इब्राहीम (अ) के मेहमानों का (हाल) सुना दो। (51) जब वह उस के पास आए तो उन्होंने ने सलाम कहा, उस ने कहा हम तुम से डरते हैं। (52)

उन्होंने ने कहा डरो नहीं, हम तुम्हें एक लड़के की खुशखबरी देते हैं इल्म वाले की। (53)

उस (इब्राहीम अ) ने कहा क्या तुम मुझे इस हाल में खुशखबरी देते हो कि मुझे बुढ़ापा पहुँच गया है? सो किस बात की खुशखबरी देते हो? (54)

वह बोले हम ने तुम्हें खुशखबरी दी है सच्चाई के साथ, आप मायूस होने वालों में से न हों। (55)

उस ने कहा अपने रब की रहमत से कौन मायूस होगा? गुमराहों के सिवा। (56)

उस ने कहा ऐ फ़रिश्तो! पस तुम्हारी मुहिम क्या है? (57)

वह बोले वेशक हम भेजे गए हैं मुज्रिमों की एक कौम की तरफ, (58)

सिवाए लूत (अ) के घर वालों के, अलबत्ता हम उन सब को बचा लेंगे, (59)

सिवाए उस की औरत के, हम ने फैसला कर लिया है कि वह पीछे रह जाने वालों में से है। (60)

पस जब फ़रिश्ते लूत (अ) के घर वालों के पास आए, (61)

उस ने कहा वेशक तुम नाआशना लोग हो। (62)

वह बोले बल्कि हम तुम्हारे पास उस (अज़ाब) के साथ आए हैं जिस में वह शक करते थे। (63)

और हम तुम्हारे पास हक के साथ आए हैं और वेशक हम सच्चे हैं। (64)

पस अपने घर वालों को रात के एक हिस्से में (कुछ रात रहे) ले निकलें और खुद उन के पीछे पीछे चलें, और न तुम में से कोई पीछे मुड़ कर देखे, और चले जाओ जैसे तुम्हें हुक्म दिया गया है। (65)

और हम ने उस की तरफ उस बात का फैसला भेज दिया कि सुबह होते उन लोगों की जड़ कट जाएगी। (66)

और शहर वाले खुशियाँ मनाते आए। (67)

उस (लूत अ) ने कहा यह मेरे मेहमान हैं, मुझे तुम रुस्वा न करो। (68)

और अल्लाह से डरो और मुझे ख़वार न करो। (69)

वह बोले क्या हम ने तुझे सारे जहान (की हिमायत से) मना नहीं किया? (70)

उस ने कहा यह मेरी बेटियाँ हैं (इन से निकाह कर लो) अगर तुम्हें करना है। (71)

(ऐ मुहम्मद स) तुम्हारी जान की कसम यह लोग वेशक अपने नशे में मदहोश थे। (72)

قَالُوا لَا تَوْجَلْ إِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلَامٍ عَلِيمٍ ﴿٥٣﴾ قَالَ أَبَشْرُتُمُونِي

क्या तुम मुझे खुशखबरी देते हो	उस ने कहा	53	इल्म वाला	एक लड़का	वेशक हम तुम्हें खुशखबरी देते हैं	डरो नहीं	उन्होंने ने कहा
-------------------------------	-----------	----	-----------	----------	----------------------------------	----------	-----------------

عَلَى أَنْ مَسَّنِيَ الْكِبَرُ فَبِمِ تَبَشِّرُونَ ﴿٥٤﴾ قَالُوا بَشْرُكَ

हम ने तुम्हें खुशखबरी दी	वह बोले	54	तुम खुशखबरी देते हो	सो किस बात	बुढ़ापा	मुझे पहुँच गया	कि	पर - में
--------------------------	---------	----	---------------------	------------	---------	----------------	----	----------

بِالْحَقِّ فَلَا تَكُنْ مِنَ الْقَنِطِينَ ﴿٥٥﴾ قَالَ وَمَنْ يَقْنَطُ مِنْ

से	मायूस होगा	और कौन	उस ने कहा	55	मायूस होने वाले	से	आप न हों	सच्चाई के साथ
----	------------	--------	-----------	----	-----------------	----	----------	---------------

رَحْمَةِ رَبِّهِ إِلَّا الضَّالُّونَ ﴿٥٦﴾ قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ أَيُّهَا

ऐ	पस क्या है तुम्हारा काम (मुहिम)	उस ने कहा	56	गुमराह (जमा)	सिवाए	अपना रब	रहमत
---	---------------------------------	-----------	----	--------------	-------	---------	------

الْمُرْسَلُونَ ﴿٥٧﴾ قَالُوا إِنَّا أُرْسِلْنَا إِلَى قَوْمٍ مُّجْرِمِينَ ﴿٥٨﴾ إِلَّا

सिवाए	58	मुज्रिम (जमा)	एक कौम	तरफ	भेजे गए	हम वेशक	वह बोले	57	भेजे हुए (फ़रिश्तो)
-------	----	---------------	--------	-----	---------	---------	---------	----	---------------------

أَل لُّوطٍ إِنَّا لَمُنَجُّوهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٥٩﴾ إِلَّا امْرَأَتَهُ قَدَرْنَا لَهَا

से	वेशक वह	हम ने फैसला कर लिया है	उस की औरत	सिवाए	59	सब	अलबत्ता हम उन्हें बचा लेंगे	हम	घर वाले लूत के
----	---------	------------------------	-----------	-------	----	----	-----------------------------	----	----------------

الْغَيْرِينَ ﴿٦٠﴾ فَلَمَّا جَاءَ آلَ لُوطٍ الْمُرْسَلُونَ ﴿٦١﴾ قَالَ إِنَّكُمْ قَوْمٌ

लोग	वेशक तुम	उस ने कहा	61	भेजे हुए (फ़रिश्ते)	लूत (अ) के घर वाले	आए	पस जब	60	पीछे रह जाने वाले
-----	----------	-----------	----	---------------------	--------------------	----	-------	----	-------------------

مُنْكَرُونَ ﴿٦٢﴾ قَالُوا بَلْ جِئْنَاكَ بِمَا كَانُوا فِيهِ يَمْتَرُونَ ﴿٦٣﴾

63	शक करते	उस में	वह थे	उस के साथ जो	हम आए हैं तुम्हारे पास	बल्कि	वह बोले	62	ऊपरे (ना आशना)
----	---------	--------	-------	--------------	------------------------	-------	---------	----	----------------

وَأَتَيْنَكَ بِالْحَقِّ وَإِنَّا لَصَادِقُونَ ﴿٦٤﴾ فَأَسْرِ بِأَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ

से	एक हिस्सा	अपने घर वालों को	पस ले निकलें आप	64	अलबत्ता सच्चे	और वेशक हम	हक के साथ	और हम तुम्हारे पास आए हैं
----	-----------	------------------	-----------------	----	---------------	------------	-----------	---------------------------

الَّيْلِ وَاتَّبِعْ أَدْبَارَهُمْ وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ أَحَدٌ وَامْضُوا

और चले जाओ	कोई	तुम में से	पीछे मुड़ कर देखे	और न	उन के पीछे	और खुद चलें	रात
------------	-----	------------	-------------------	------	------------	-------------	-----

حَيْثُ تُمْرُونَ ﴿٦٥﴾ وَقَضَيْنَا إِلَيْهِ ذَلِكَ الْأَمْرَ أَنَّ دَابِرَ هَؤُلَاءِ

यह लोग	जड़	कि	बात	उस	उस की तरफ	और हम ने फैसला भेजा	65	तुम्हें हुक्म दिया गया	जैसे
--------	-----	----	-----	----	-----------	---------------------	----	------------------------	------

مَقْطُوعٌ مُّصْبِحِينَ ﴿٦٦﴾ وَجَاءَ أَهْلَ الْمَدِينَةِ يَسْتَبْشِرُونَ ﴿٦٧﴾

67	खुशियाँ मनाते	शहर वाले	और आए	66	सुबह होते	कटी हुई
----	---------------	----------	-------	----	-----------	---------

قَالَ إِنَّ هَؤُلَاءِ ضَيْفِي فَلَا تَفْضَحُونِ ﴿٦٨﴾ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَلَا تُخْزُونِ ﴿٦٩﴾

69	और मुझे ख़वार न करो	अल्लाह	और डरो	68	पस मुझे रुस्वा न करो तुम	मेरे मेहमान	यह लोग	कि	उस ने कहा
----	---------------------	--------	--------	----	--------------------------	-------------	--------	----	-----------

قَالُوا أَوَلَمْ نَنْهَكَ عَنِ الْعُلَمِينَ ﴿٧٠﴾ قَالَ هَؤُلَاءِ بَنَاتِي إِنْ

अगर	मेरी बेटियाँ	यह	उस ने कहा	70	सारे जहान	से	हम ने तुझे मना किया	क्या नहीं	वह बोले
-----	--------------	----	-----------	----	-----------	----	---------------------	-----------	---------

كُنْتُمْ فَعَلِينَ ﴿٧١﴾ لَعَمْرُكَ إِنَّهُمْ لَفِي سَكْرَتِهِمْ يَعْمَهُونَ ﴿٧٢﴾

72	मदहोश थे	अपने नशे	अलबत्ता में	वेशक वह	तुम्हारी जान की कसम	71	करने वाले (करना है)	तुम हो
----	----------	----------	-------------	---------	---------------------	----	---------------------	--------

فَاخَذَتْهُمْ الصَّيْحَةُ مُشْرِقِينَ ﴿٧٣﴾ فَجَعَلْنَا عَلَيْهَا سَافِلَهَا						
उस के नीचे का हिस्सा	उस के ऊपर का हिस्सा	पस हम ने उसे कर दिया	73	सूरज निकलते वक़्त	चिंघाड़	पस उन्हें आ लिया
وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِّنْ سِجِّيلٍ ﴿٧٤﴾ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً						
निशानियाँ	उस	में	वेशक	74	संगे गिल (खिंगर)	से पत्थर उन पर और हम ने बरसाए
لِّلْمُتَوَسِّمِينَ ﴿٧٥﴾ وَإِنَّهَا لَبِسَبِيلٍ مُّقِيمٍ ﴿٧٦﴾ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً						
निशानी	उस	में	वेशक	76	सीधा	रास्ते पर और वेशक वह गौर ओ फ़िक्र करने वालों के लिए
لِّلْمُؤْمِنِينَ ﴿٧٧﴾ وَإِنْ كَانَ أَصْحَابُ الْأَيْكَةِ لَظَالِمِينَ ﴿٧٨﴾ فَانْتَقَمْنَا						
हम ने बदला लिया	78	ज़ालिम (जमा)	ऐयका (बन) वाले (कौमे शुऐब)	थे	और तहकीक	ईमान वालों के लिए
مِنْهُمْ وَإِنَّهُمَا لَبِإِمَامٍ مُّبِينٍ ﴿٧٩﴾ وَلَقَدْ كَذَّبَ أَصْحَابُ الْحَجَرِ						
उन से	और वेशक वह दोनों	रास्ते पर	खुले	79	और अलबत्ता झुटलाया	हिज्र वाले
الْمُرْسَلِينَ ﴿٨٠﴾ وَاتَيْنَهُمُ آيَاتِنَا فَكَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ﴿٨١﴾						
रसूल (जमा)	80	और हम ने उन्हें दी	अपनी निशानियाँ	पस वह थे	उस से	सुँह फेरने वाले
وَكَانُوا يَنْحِتُونَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا آمِنِينَ ﴿٨٢﴾						
और वह तराशते थे	से	पहाड़ (जमा)	घर	82	बेखौफ़ ओ ख़तर	
فَاخَذَتْهُمْ الصَّيْحَةُ مُصْبِحِينَ ﴿٨٣﴾ فَمَا أَغْنَىٰ عَنْهُمْ مَا						
पस उन्हें आ लिया	चिंघाड़	सुबह होते	83	तो न काम आया	उन के	जो
كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٨٤﴾ وَمَا خَلَقْنَا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا						
वह कमाया करते थे	84	और नहीं	पैदा किया हम ने	आस्मान (जमा)	और ज़मीन	और जो
بَيْنَهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ وَإِنَّ السَّاعَةَ لَآتِيَةٌ فَاصْفَحِ الصَّفْحَ						
उन के दरमियान	मगर	हक के साथ	और वेशक	क़ियामत	ज़रूर आने वाली	पस दरगुज़र करो
الْجَمِيلِ ﴿٨٥﴾ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْخَلْقُ الْعَلِيمُ ﴿٨٦﴾ وَلَقَدْ آتَيْنَاكَ						
अच्छा	85	वेशक	तुम्हारा रब	वह	पैदा करने वाला	जानने वाला
سَبْعًا مِّنَ الْمَثَانِي وَالْقُرْآنَ الْعَظِيمَ ﴿٨٧﴾ لَا تُمَدِّنْ						
सात	से	बार बार दोहराई जाने वाली	और कुरआन	अज़मत वाला	87	हरगिज़ न बढ़ाएं आप
عَيْنِيكَ إِلَىٰ مَا مَتَّعْنَا بِهِ أَزْوَاجًا مِنْهُمْ وَلَا تَحْزَنْ						
अपनी आँखें	तरफ़	जो हम ने बरतने को दिया	उस को	कई जोड़े	उन के	और न ग़म खाएं
عَلَيْهِمْ وَآخِضْ جَنَاحَكَ لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿٨٨﴾ وَقُلْ إِنِّي أَنَا						
उन पर	और झुका दें	अपने बाजू	मोमिनों के लिए	88	और कह दें	मैं वेशक मैं
النَّذِيرِ الْمُبِينِ ﴿٨٩﴾ كَمَا أَنْزَلْنَا عَلَى الْمُقْتَسِمِينَ ﴿٩٠﴾						
डराने वाला अलानिया	89	जैसे	हम ने नाज़िल किया	पर	तक़सीम करने वाले	90

पस उन्हें सूरज निकलते चिंघाड़ ने आ लिया। (73)

पस हम ने उस (बस्ती) का ऊपर का हिस्सा नीचे (उल्टा पुल्टा) कर दिया, और हम ने उन पर खिंगर के पत्थर बरसाए। (74)

वेशक उस में गौर ओ फ़िक्र करने वालों के लिए निशानियाँ हैं। (75)

और वेशक वह (बस्ती) सीधे रास्ते पर (वाक़े) है। (76)

वेशक उस में ईमान वालों के लिए निशानी है। (77)

और तहकीक़ कौमे शुऐब (अ) के लोग ज़ालिम थे। (78)

और हम ने उन से बदला लिया, और वह दोनों (बसतियाँ वाक़े हैं) एक खुले रास्ते पर। (79)

और अलबत्ता “हिज्र” के रहने वालों ने रसूलों को झुटलाया। (80)

और हम ने उन्हें अपनी निशानियाँ दी पस वह उन से सुँह फेरने वाले थे। (81)

और वह पहाड़ों से बेखौफ़ ओ ख़तर घर तराशते थे। (82)

पस उन्हें सुबह होते चिंघाड़ ने आ लिया। (83)

तो जो वह कमाया करते थे (उन का क्या धरा) उन के काम न आया। (84)

और हम ने आस्मानों और ज़मीन को और जो उन के दरमियान है नहीं पैदा किया मगर हक़ (हिक्मत) के साथ, और वेशक़ क़ियामत ज़रूर आने वाली है पस अच्छी तरह माफ़ करो। (85)

वेशक तुम्हारा रब ही पैदा करने वाला, जानने वाला है। (86)

और तहकीक़ हम ने तुम्हें (सूरह-ए-फ़ातिहा की) बार बार दोहराई जाने वाली सात (आयात) दी और अज़मत वाला कुरआन। (87)

आप (स) हरगिज़ अपनी आँखें न बढ़ाएं (आँख उठा कर भी न देखें) (उन चीज़ों की) तरफ़ जो हम ने उन के कई जोड़ों (गिरोहों) को दी, और उन पर ग़म न खाएं, और आप (स) अपने बाजू झुका दें मोमिनों के लिए। (88)

और कह दें वेशक मैं अलानिया डराने वाला हूँ। (89)

जैसे हम ने तक़सीम करने वालों (तफ़रिका परदाज़ों) पर अज़ाब नाज़िल किया। (90)

जिन लोगों ने कुरआन को टुकड़े टुकड़े कर डाला (कुछ को माना कुछ को न माना)। (91)

सो तेरे रब की कसम हम उन सब से ज़रूर पूछेंगे। (92)

उस की बावत जो वह करते थे। (93)

पस जिस बात का आप (स) को हुक्म दिया गया है साफ़ साफ़ कह दें और मुश्रिकों से एराज़ करें (मुँह फेर लें)। (94)

वेशक मज़ाक़ उड़ाने वालों (के खिलाफ़) तुम्हारे लिए हम काफी हैं। (95)

जो लोग अल्लाह के साथ कोई

दूसरा माबूद बनाते हैं पस वह

अनकरीब जान लेंगे। (96)

और अलबत्ता हम जानते हैं कि वह जो कहते हैं उस से आप (स) का दिल तंग होता है, (97)

तो तस्वीह करें (पाकीज़गी बयान करें) अपने रब की हमद के साथ, और

सिज्दा करने वालों में से हों, (98)

और अपने रब की इबादत करते रहें यहां तक कि आप (स) के पास

यकीनी बात (मौत) आ जाए। (99)

अल्लाह के नाम से जो निहायत

मेहरबान, रहम करने वाला है

आपहुँचा अल्लाह का हुक्म सो उस की जल्दी न करो, वह पाक है

और उस से बरतर जो वह (अल्लाह का) शरीक बनाते हैं। (1)

वह फ़रिश्ते अपने हुक्म से वहि के साथ नाज़िल करता है अपने बन्दों में से जिस पर वह चाहता है कि तुम डराओ कि मेरे सिवा कोई माबूद नहीं, पस मुझ ही से डरो। (2)

उस ने पैदा किए आस्मान और ज़मीन हिक्मत के साथ, वह उस से बरतर है जो वह शरीक करते हैं। (3)

उस ने इन्सान को पैदा किया तुत्फ़े से, फिर वह नागहां खुला झगड़ालू हो गया। (4)

और उस ने चौपाए पैदा किए तुम्हारे लिए, उन में गर्म सामान (गर्म कपड़े) और फ़ाइदे हैं, और उन में

से (वाज़ को) तुम खाते हो। (5)

और तुम्हारे लिए उन में खूबसूरती और शान है जिस वक़्त शाम को चरा कर लाते हो, और जिस वक़्त सुबह को चराने ले जाते हो। (6)

الَّذِينَ جَعَلُوا الْقُرْآنَ عِضِينَ ۖ فَوَرِّبَكَ لَنَسَلْتَهُمُ

हम ज़रूर पूछेंगे उन से	सो तेरे रब की कसम	91	टुकड़े टुकड़े	कुरआन	उन्होंने ने कर दिया	वह लोग जो
------------------------	-------------------	----	---------------	-------	---------------------	-----------

أَجْمَعِينَ ۖ عَمَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۖ فَاصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ

तुम्हें हुक्म दिया गया	जिस का	पस साफ़ साफ़ कह दें आप (स)	93	वह करते थे	उस की बावत जो	92	सब
------------------------	--------	----------------------------	----	------------	---------------	----	----

وَأَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِينَ ۖ إِنَّا كَفَيْنَاكَ الْمُسْتَهْزِئِينَ ۖ الَّذِينَ

जो लोग	95	मज़ाक़ उड़ाने वाले	काफी है तुम्हारे लिए	वेशक हम	94	मुश्रिक (जमा)	से	और एराज़ करें
--------	----	--------------------	----------------------	---------	----	---------------	----	---------------

يَجْعَلُونَ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ ۖ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ۖ وَلَقَدْ نَعْلَمُ

हम जानते हैं	और अलबत्ता	96	वह जान लेंगे	पस अनकरीब	कोई दूसरा	माबूद	अल्लाह के साथ	बनाते हैं
--------------	------------	----	--------------	-----------	-----------	-------	---------------	-----------

أَنَّكَ يَصِيقُ صَدْرُكَ بِمَا يَقُولُونَ ۖ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُنْ

और हो	अपना रब	हमद के साथ	तो तस्वीह करें	97	जो वह कहते हैं	उस से	तुम्हारा सीना (दिल)	तंग होता है	वेशक तुम
-------	---------	------------	----------------	----	----------------	-------	---------------------	-------------	----------

مِّنَ السَّجِدِينَ ۖ وَاعْبُدْ رَبَّكَ حَتَّىٰ يَأْتِيَكَ الْيَقِينُ ۚ

99	यकीनी बात	आए आप (स) के पास	यहां तक कि	अपना रब	और इबादत करें	98	सिज्दा करने वाले	से
----	-----------	------------------	------------	---------	---------------	----	------------------	----

آيَاتُهَا ۚ ۱۲۸ ﴿١٦﴾ سُورَةُ النَّحْلِ ﴿١٦﴾ رُكُوعَاتُهَا ۚ ۱۶

रुक़आत 16 (16) सूरतुन नहल आयात 128
शहद की मक्खी

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

أَتَىٰ أَمْرُ اللَّهِ فَلَا تَسْتَعْجِلُوهُ ۖ سُبْحَنَهُ وَتَعَالَىٰ عَمَّا

उस से जो	और बरतर	वह पाक है	सो उस की जल्दी न करो	आ पहुँचा अल्लाह का हुक्म
----------	---------	-----------	----------------------	--------------------------

يُشْرِكُونَ ۚ يُنَزِّلُ الْمَلَائِكَةَ بِالرُّوحِ مِنْ أَمْرِهِ عَلَىٰ مَنْ يَشَاءُ

जिसे चाहता है	पर	अपने हुक्म	से	वहि के साथ	फ़रिश्ते	वह नाज़िल करता है	1	वह शरीक बनाते हैं
---------------	----	------------	----	------------	----------	-------------------	---	-------------------

مِنْ عِبَادَةٍ أَنْ أُنْذِرُوا أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا فَاتَّقُونِ ۚ خَلَقَ

उस ने पैदा किए	2	पस मुझ से डरो	मेरे	सिवाए	कोई माबूद नहीं	कि वह	तुम डराओ	कि	अपने बन्दे	से
----------------	---	---------------	------	-------	----------------	-------	----------	----	------------	----

السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ بِالْحَقِّ ۖ تَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۚ خَلَقَ

पैदा किया उस ने	3	वह शरीक करते हैं	उस से जो	बरतर	हक़ (हिक्मत) के साथ	और ज़मीन	आस्मान (जमा)
-----------------	---	------------------	----------	------	---------------------	----------	--------------

الْإِنْسَانَ مِنْ نُطْفَةٍ فَإِذَا هُوَ خَصِيمٌ مُّبِينٌ ۚ وَالْأَنْعَامَ

और चौपाए	4	खुला	झगड़ालू	वह	फिर नागहां	तुत्फ़ा	से	इन्सान
----------	---	------	---------	----	------------	---------	----	--------

خَلَقَهَا لَكُمْ فِيهَا دِفْءٌ وَمَنْفَعٌ وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ۚ

5	तुम खाते हो	उन में से	और फ़ाइदे (जमा)	गर्म सामान	उन में	तुम्हारे लिए	उस ने उन को पैदा किए
---	-------------	-----------	-----------------	------------	--------	--------------	----------------------

وَلَكُمْ فِيهَا جَمَالٌ حِينَ تُرِيحُونَ وَحِينَ تَسْرَحُونَ ۚ

6	सुबह को चराने ले जाते हो	और जिस वक़्त	शाम को चरा कर लाते हो	जिस वक़्त	खूबसूरती - शान	उन में	और तुम्हारे लिए
---	--------------------------	--------------	-----------------------	-----------	----------------	--------	-----------------

وَتَحْمِلْ أَثْقَالَكُمْ إِلَىٰ بَلَدٍ لَّمْ تَكُونُوا بَلِغِيهِ إِلَّا بِشِقِّ							
हलकान कर के	बगैर	उन तक पहुँचने वाले	न थे तुम	शहर (जमा)	तरफ	तुम्हारे बोझ	और वह उठाते हैं
الْأَنْفُسِ إِنَّ رَبَّكُمْ لَرَّءُوفٌ رَّحِيمٌ ﴿٧﴾ وَالْخَيْلِ وَالْبِغَالِ							
और खच्चर	और घोड़े	7	रहम करने वाला	इन्तिहाई शफीक	तुम्हारा रब	वेशक	जानें
وَالْحَمِيرِ لَتَرْكَبُوهَا وَزِينَةً وَيَخْلُقُ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٨﴾							
8	तुम नहीं जानते	जो	और वह पैदा करता है	और ज़ीनत	ताकि तुम उन पर सवार हो	और गधे	
وَعَلَى اللَّهِ قَصْدُ السَّبِيلِ وَمِنْهَا جَايِزٌ وَلَوْ شَاءَ لَهَدَّكُمْ							
तो वह तुम्हें हिदायत देता	और अगर वह चाहे	टेढ़ी	और उस से	राह	सीधी	और अल्लाह पर	
أَجْمَعِينَ ﴿٩﴾ هُوَ الَّذِي أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً لَكُمْ مِنْهُ							
उस से	तुम्हारे लिए	पानी	आस्मान	से	नाज़िल किया (बरसाया)	जिस ने	वही 9 सब
شَرَابٍ وَمِنْهُ شَجَرٌ فِيهِ تُسِيمُونَ ﴿١٠﴾ يُنْبِتُ لَكُمْ بِهِ							
उस से	तुम्हारे लिए	वह उगाता है	10	तुम चराते हो	उस में	दरख़्त	और उस से पीना
الزَّرْعِ وَالزَّيْتُونَ وَالنَّخِيلَ وَالْأَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ							
हर	और से - के	और अंगूर	और खजूर	और जैतून	खेती		
الثَّمَرِ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ﴿١١﴾ وَسَخَّرَ							
और मुसख़्ख़र किया	11	ग़ौर ओ फ़िक्र करते हैं	लोगों के लिए	अलबत्ता निशानियां	उस में	वेशक	फल (जमा)
لَكُمْ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُومَ							
और सितारे	और चाँद	और सूरज	और दिन	रात	तुम्हारे लिए		
مُسَخَّرَتْ بِأَمْرِهِ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿١٢﴾							
12	वह अक़ल से काम लेते हैं	लोगों के लिए	अलबत्ता निशानियां	उस में	वेशक	उस के हुक्म से	मुसख़्ख़र
وَمَا ذَرَأَ لَكُمْ فِي الْأَرْضِ مُخْتَلِفًا أَلْوَانُهُ إِنَّ							
वेशक	उस के रंग	मुख़्तलिफ़	ज़मीन में	तुम्हारे लिए	पैदा किया	और जो	
فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَذَّكَّرُونَ ﴿١٣﴾ وَهُوَ الَّذِي							
जो - जिस	और वही	13	वह सोचते हैं	लोगों के लिए	अलबत्ता निशानियां	उस में	
سَخَّرَ الْبَحْرَ لَتَأْكُلُوا مِنْهُ لَحْمًا طَرِيًّا وَتَسْتَخْرِجُوا							
और तुम निकालो	ताज़ा	गोश्त	उस से	ताकि तुम खाओ	दर्या	मुसख़्ख़र किया	
مِنْهُ حِلْيَةً تَلْبَسُونَهَا وَتَرَى الْفُلْكَ مَوَاحِرَ							
पानी चीरने वाली	कश्ती	और तुम देखते हो	तुम वह पहनते हो	ज़ेवर	उस से		
فِيهِ وَلِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ وَلِعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿١٤﴾							
14	शुक्र करो	और ताकि तुम	उस का फ़ज़ल	से	और ताकि तलाश करो	उस में	

और वह तुम्हारे बोझ उन शहरों तक ले जाते हैं जहाँ जानें हलकान किए बगैर तुम पहुँचने वाले न थे। वेशक तुम्हारा रब इन्तिहाई शफीक, निहायत रहम वाला है। (7)

और घोड़े और खच्चर और गधे ताकि तुम उन पर सवार हो और ज़ीनत के लिए (पैदा किए) और वह पैदा करता है जो तुम नहीं जानते। (8)

और सीधी राह अल्लाह तक पहुँचती है और उन में से (कोई) राह टेढ़ी है, और अगर वह चाहता तो तुम सब को हिदायत द देता। (9)

वही है जिस ने आस्मान से पानी बरसाया, उस से तुम्हारे लिए पीने को है, और उस से दरख़्त (सैराब होते) हैं और जिन में तुम (मवेशी) चराते हो, (10)

वह उस से तुम्हारे लिए उगाता है खेती, और जैतून, और खजूर, और अंगूर और हर किसम के फल, वेशक उस में ग़ौर ओ फ़िक्र करने वालों के लिए निशानियां हैं। (11)

और उस ने तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र किया रात और दिन को, और सूरज और चाँद को, और सितारे मुसख़्ख़र (काम में लगे हुए) हैं। उस के हुक्म से, वेशक उस में अक़ल से काम लेने वाले लोगों के लिए निशानियां हैं। (12)

और तुम्हारे लिए ज़मीन में पैदा की मुख़्तलिफ़ (चीज़ें) रंग व रंग की, वेशक उस में सोचने वाले लोगों के लिए निशानियां हैं। (13)

और वही है जिस ने दर्या को मुसख़्ख़र किया ताकि तुम उस से (मछलियों का) ताज़ा गोश्त खाओ, और उस से ज़ेवर निकालो जो तुम पहनते हो, और तुम देखते हो उस में कश्तियां पानी को चीर कर चलती हैं और ताकि तुम उस के फ़ज़ल से (रोज़ी) तलाश करो और ताकि तुम शुक्र करो। (14)

और उस ने ज़मीन पर पहाड़ रखे कि तुम्हें ले कर (ज़मीन) झुक न पड़े, और दर्या और रास्ते (बनाए)

ताकि तुम राह पाओ। (15)

और अ़लामतें (बनाई) और वह सितारों से रास्ता पाते हैं। (16)

क्या जो (अल्लाह) पैदा करता है उस जैसा है जो पैदा नहीं करता, पस क्या तुम ग़ौर नहीं करते? (17)

और अगर तुम अल्लाह की नेमतें शुमार करो तो उन्हें पूरा न गिन सकोगे, वेशक अल्लाह व़ख़शने वाला, निहायत मेहरबान है। (18)

और अल्लाह जानता है जो तुम छुपाते हो और जो तुम ज़ाहिर करते हो। (19)

और वह जिन्हें पुकारते हैं अल्लाह के सिवा वह कुछ भी पैदा नहीं करते बल्कि वह खुद पैदा किए गए हैं। (20)

मुर्दे हैं, ज़िन्दा नहीं, (बेजान हैं), और वह नहीं जानते वह कब उठाए जाएंगे। (21)

तुम्हारा मावूद, मावूदे यकता है, पस जो लोग ईमान नहीं रखते आखिरत पर उन के दिल मुन्किर हैं, और वह मगरूर हैं। (22)

यकीनी बात है अल्लाह जानता है जो वह छुपाते हैं और जो वह ज़ाहिर करते हैं। वेशक वह तकव्वुर करने वालों को पसन्द नहीं करता। (23)

और जब उन से कहा जाए क्या नाज़िल किया तुम्हारे रब ने? तो वह कहते हैं पहले लोगों की कहानियां हैं। (24)

अन्जामे कार वह अपने पूरे बोझ उठाएंगे क़ियामत के दिन, और कुछ उन के बोझ जिन्हें वह बग़ैर इल्म के गुमराह करते हैं, खूब सुन लो, बुरा है जो वह लादते हैं। (25)

जो उन से पहले थे उन्होंने ने मक्कारी की पस उन की इमारत पर अल्लाह (का अज़ाब) बुन्यादों से आया, पस गिर पड़ी उन पर छत ऊपर से, और उन पर अज़ाब आया जहां से उन्हें ख़याल न था। (26)

وَأَلْقَى فِي الْأَرْضِ رَوَاسِيَ أَنْ تَمِيدَ بِكُمْ وَأَنْهَارًا وَسُبُلًا

और रास्ते	और नहरें - दर्या	तुम्हें ले कर	कि झुक न पड़े	पहाड़	ज़मीन में - पर	और डाले (रखे)
-----------	------------------	---------------	---------------	-------	----------------	---------------

لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ﴿١٥﴾ وَعَلَّمَتْ وَبِالنَّجْمِ هُمْ يَهْتَدُونَ ﴿١٦﴾ أَفَمَنْ

क्या - पस जो	16	रास्ता पाते हैं	वह	और सितारा	और अ़लामतें	15	राह पाओ	ताकि तुम
--------------	----	-----------------	----	-----------	-------------	----	---------	----------

يَخْلُقُ كَمَنْ لَا يَخْلُقُ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿١٧﴾ وَإِنْ تَعْدُوا نِعْمَةَ اللَّهِ

अल्लाह की नेमत	तुम शुमार करो	और अगर	17	क्या - पस तुम ग़ौर नहीं करते	पैदा नहीं करता	उस जैसा जो	पैदा करे
----------------	---------------	--------	----	------------------------------	----------------	------------	----------

لَا تُحْصَوْهَا إِنَّ اللَّهَ لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١٨﴾ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تُسِرُّونَ

जो तुम छुपाते हो	जानता है	और अल्लाह	18	निहायत मेहरबान	अलवत्ता व़ख़शने वाला	वेशक अल्लाह	उस को पूरा न गिन सकोगे
------------------	----------	-----------	----	----------------	----------------------	-------------	------------------------

وَمَا تُعْلِنُونَ ﴿١٩﴾ وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَا يَخْلُقُونَ

वह पैदा नहीं करते	अल्लाह	सिवाए	वह पुकारते हैं	और जिन्हें	19	तुम ज़ाहिर करते हो	और जो
-------------------	--------	-------	----------------	------------	----	--------------------	-------

شَيْئًا وَهُمْ يُخْلُقُونَ ﴿٢٠﴾ أَمْوَاتٌ غَيْرُ أَحْيَاءٍ وَمَا يَشْعُرُونَ

और वह नहीं जानते	ज़िन्दा	नहीं	मुर्दे	20	पैदा किए गए	और वह (खुद)	कुछ भी
------------------	---------	------	--------	----	-------------	-------------	--------

أَيَّانَ يُبْعَثُونَ ﴿٢١﴾ إِلَهُكُمْ إِلَهٌ وَاحِدٌ فَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ

ईमान नहीं रखते	पस जो लोग	एक (यकता)	मावूद	तुम्हारा मावूद	21	वह उठाए जाएंगे	कब
----------------	-----------	-----------	-------	----------------	----	----------------	----

بِالْآخِرَةِ قُلُوبُهُمْ مُنْكَرَةٌ وَهُمْ مُسْتَكْبِرُونَ ﴿٢٢﴾ لَا جَرَمَ أَنَّ

कि	यकीनी बात	22	तकव्वुर करने वाले (मगरूर)	और वह	मुन्किर (इन्कार करने वाले)	उन के दिल	आखिरत पर
----	-----------	----	---------------------------	-------	----------------------------	-----------	----------

اللَّهُ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُسْتَكْبِرِينَ ﴿٢٣﴾

23	तकव्वुर करने वाले	पसन्द नहीं करता	वेशक वह	वह ज़ाहिर करते हैं	और जो	वह छुपाते हैं	जो	जानता है	अल्लाह
----	-------------------	-----------------	---------	--------------------	-------	---------------	----	----------	--------

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ مَّاذَا أَنْزَلَ رَبُّكُمْ قَالُوا آسَاطِيرُ

कहानियां	वह कहते हैं	तुम्हारा रब	नाज़िल किया	क्या	उन से	कहा जाए	और जब
----------	-------------	-------------	-------------	------	-------	---------	-------

الْأُولَٰئِينَ ﴿٢٤﴾ لِيَحْمِلُوا أَوْزَارَهُمْ كَامِلَةً يَوْمَ الْقِيَمَةِ

क़ियामत के दिन	पूरे	अपने बोझ (गुनाह)	अन्जामे कार वह उठाएंगे	24	पहले लोग
----------------	------	------------------	------------------------	----	----------

وَمِنْ أَوْزَارِ الَّذِينَ يَضِلُّونَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ إِلَّا سَاءَ

बुरा	खूब सुन लो	इल्म के बग़ैर	वह गुमराह करते हैं	उन के जिन्हें	बोझ	और कुछ
------	------------	---------------	--------------------	---------------	-----	--------

مَا يَزِرُونَ ﴿٢٥﴾ قَدْ مَكَرَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَآتَى

पस आया	उन से पहले	वह लोग जो	तहकीक़ मक्कारी की	25	जो वह लादते हैं
--------	------------	-----------	-------------------	----	-----------------

اللَّهُ بُنْيَانَهُمْ مِنَ الْقَوَاعِدِ فَخَرَّ عَلَيْهِمُ السَّقْفُ مِنْ

से	छत	उन पर	पस गिर पड़ी	बुन्याद (जमा)	से	उन की इमारत	अल्लाह
----	----	-------	-------------	---------------	----	-------------	--------

فَوْقِهِمْ وَأَتَاهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٢٦﴾

26	उन्हें ख़याल न था	जहां से	से	अज़ाब	और आया उन पर	उन के ऊपर
----	-------------------	---------	----	-------	--------------	-----------

ثُمَّ يَوْمَ الْقِيَمَةِ يُخْزِيهِمْ وَيَقُولُ أَيْنَ شُرَكَائِيَ الَّذِينَ كُنْتُمْ تُشَاقِقُونَ فِيهِمْ قَالَ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ إِنَّ الْخِزْيَ							
फिर	क़ियामत के दिन	वह उन्हें रुस्वा करेगा	और कहेगा	कहां	मेरे शरीक	वह जो कि	
كُنْتُمْ تُشَاقِقُونَ فِيهِمْ قَالَ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ إِنَّ الْخِزْيَ							
तुम थे	झगड़ते	उन (के बारे) में	कहेंगे	वह लोग जो	दिए गए	इल्म (इल्म वाले)	वेशक
الْيَوْمَ وَالسُّوءَ عَلَى الْكَافِرِينَ ﴿٢٧﴾ الَّذِينَ تَتَوَفَّيْهِمُ الْمَلَائِكَةُ							
आज	और बुराई	पर	काफ़िर (जमा)	27	वह जो कि	उन की जान निकालते हैं	फ़रिश्ते
ظَالِمِي أَنْفُسِهِمْ ۖ فَالْقُوا السَّلَامَ مَا كُنَّا نَعْمَلُ مِنْ سُوءٍ بَلَىٰ إِنَّ							
जुल्म करते हुए	अपने ऊपर	पस डालेंगे	पैगामे इताअत	हम न करते थे	कोई बुराई	हां हां	वेशक
اللَّهُ عَلِيمٌ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٢٨﴾ فَادْخُلُوا أَبْوَابَ جَهَنَّمَ							
अल्लाह	जानने वाला	वह जो	तुम करते थे	28	सो तुम दाख़िल हो	दरवाज़े	जहन्नम
خُلِدِينَ فِيهَا ۚ فَلَيْسَ مَثْوًى الْمُتَكَبِّرِينَ ﴿٢٩﴾ وَقِيلَ لِلَّذِينَ اتَّقَوْا							
हमेशा रहोगे	उस में	अलबत्ता बुरा	ठिकाना	तकब्वुर करने वाले	29	और कहा गया	उन लोगों से जिन्होंने ने परहेज़गारी की
مَا ذَا أَنْزَلَ رَبُّكُمْ ۖ قَالُوا خَيْرًا لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا فِي							
क्या	उतारा	तुम्हारा रब	वह बोले	बहतरीन	उन के लिए जो लोग	भलाई की	में
هَذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ وَلَدَارُ الْآخِرَةِ خَيْرٌ وَلَنِعَمَ دَارُ الْمُتَّقِينَ ﴿٣٠﴾							
इस	दुनिया	भलाई	और आख़िरत का घर	बेहतर	और क्या खूब	परहेज़गारों का घर	30
جَنَّتْ عَدْنٍ يَدْخُلُونَهَا تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ لَهُمْ فِيهَا							
बागात	हमेशगी	वह उन में दाख़िल होंगे	बहती है	उन के नीचे से	नहरें	उन के लिए	वहां
مَا يَشَاءُونَ ۚ كَذَلِكَ يَجْزِي اللَّهُ الْمُتَّقِينَ ﴿٣١﴾ الَّذِينَ تَتَوَفَّيْهِمُ							
जो वह चाहेंगे	ऐसी ही	जज़ा देता है	अल्लाह	परहेज़गार (जमा)	31	वह जो कि	उन की जान निकालते हैं
الْمَلَائِكَةُ طَيِّبِينَ ۚ يَقُولُونَ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ ۖ ادْخُلُوا الْجَنَّةَ بِمَا							
फ़रिश्ते	पाक होते हैं	वह कहते हैं	सलामती तुम पर	तुम दाख़िल हो	जन्नत	उस के बदले जो	
كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٣٢﴾ هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا أَنْ تَأْتِيَهُمُ الْمَلَائِكَةُ أَوْ يَأْتِيَ							
तुम करते थे (आमाल)	32	क्या	वह इन्तिज़ार करते हैं	मगर (सिर्फ)	यह कि	उन के पास आए	या आए
أَمْرُ رَبِّكَ ۚ كَذَلِكَ فَعَلَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ وَمَا ظَلَمَهُمْ							
हुक़्म	तेरा रब	ऐसा ही	किया	वह लोग जो	उन से पहले	और नहीं जुल्म किया उन पर	
اللَّهُ وَلَكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿٣٣﴾ فَاصَابَهُمُ سَيِّئَاتُ							
अल्लाह	और बल्कि	वह थे	अपनी जानें	जुल्म करते	33	पस उन्हें पहुँची	बुराइयां
مَا عَمِلُوا وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ﴿٣٤﴾							
जो उन्होंने ने किया (आमाल)	और घेर लिया	उन को	जो	वह थे	उस का	मज़ाक़ उड़ाते	34

फिर वह उन्हें क़ियामत के दिन रुस्वा करेगा, और वह कहेगा कहां हैं मेरे वह शरीक जिन के बारे में तुम झगड़ते थे, इल्म वाले कहेंगे वेशक आज के दिन रुस्वाई और बुराई है काफ़िरों पर। (27)

वह जिन की जान फ़रिश्ते (उस हाल में) निकालते हैं कि वह अपने ऊपर जुल्म कर रहे होते हैं, फिर वह इताअत का पैगाम डालेंगे कि हम कोई बुराई न करते थे, हां हां! अल्लाह जानने वाला है जो तुम करते थे। (28)

सो तुम जहन्नम के दरवाज़ों में दाखिल हो, उस में हमेशा रहोगे, अलबत्ता तकबुर करने वालों का बुरा ठिकाना है। (29)

और परहेज़गारों से कहा गया तुम्हारे रब ने क्या उतारा? वह बोले बहतरीन (कलाम), जिन लोगों ने भलाई की उन के लिए इस दुनिया में भलाई है और आखिरत का घर (सब से) बेहतर है, और क्या खूब है! परहेज़गारों का घर। (30)

हमेशगी के बागात, जिन में वह दाखिल होंगे, उन के नीचे नहरें बहतती हैं, वहां जो वह चाहेंगे उन के लिए होगा, अल्लाह परहेज़गारों को ऐसी ही जज़ा देता है। (31)

वह जिन की जान फ़रिश्ते (उस हाल में) निकाले हैं कि वह पाक होते हैं, वह (फ़रिश्ते) कहते हैं तुम पर सलामती हो। (32)

अपने आमाल के बदले जन्नत में दाखिल हो। क्या वह सिर्फ़ (यह) इन्तिज़ार करते हैं कि उन के पास फ़रिश्ते आएँ, या तेरे रब का हुक्म आएँ, ऐसा ही उन लोगों ने किया जो उन से पहले थे, और अल्लाह ने उन पर जुल्म नहीं किया बल्कि वह अपनी जानों पर (खुद) जुल्म करते थे। (33)

पस उन्हें पहुँची उन के आमाल की बुराइयां, और उन्हें घेर लिया उस (अज़ाब) ने जिस का वह मज़ाक़ उड़ाते थे। (34)

और कहा जिन लोगों ने शिर्क किया (मुश्रिकों ने) अगर अल्लाह चाहता तो न हम परस्तिश करते और न हमारे बाप दादा उस के सिवाए किसी शै की, और हम उस के हुक्म के सिवा कोई शै हराम न ठहराते, उसी तरह उन लोगों ने किया जो उन से पहले थे, पस क्या है रसूलों के ज़िम्मे? मगर साफ़ साफ़ पहुँचा देना। (35)

और तहकीक़ हम ने हर उम्मत में भेजा कोई न कोई रसूल कि अल्लाह की इबादत करो और सरकश से बचो, सो उन में से किसी को अल्लाह ने हिदायत दी, और उन में से बाज़ पर गुमराही साबित हो गई, पस ज़मीन में चलो फिरो, फिर देखो कैसा अन्जाम हुआ झूटलाने वालों का? (36)

अगर तुम उन की हिदायत के लिए ललचाओ तो वेशक अल्लाह हिदायत नहीं देता जिसे वह गुमराह करता है, और उन का कोई मददगार नहीं। (37)

और उन्होंने ने अल्लाह की कसम खाई अपनी सख़्त (पुर ज़ोर) कसम कि जो मर जाता है उसे अल्लाह (रोज़े क़ियामत) नहीं उठाएगा। क्यों नहीं? उस पर उस का वादा सच्चा है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते, (38)

ताकि उन के लिए ज़ाहिर कर दे जिस में वह इख़्तिलाफ़ करते हैं, और ताकि काफ़िर जान लें कि वह झूटे थे। (39)

जब हम किसी चीज़ का इरादा करें तो हमारा फ़रमाना इस के सिवा नहीं कि हम उस को कहते हैं, कि “हो जा” तो वह हो जाता है। (40)

और जिन लोगों ने अल्लाह के लिए हिज़्रत कि उस के बाद के उन पर जुल्म किया गया, हम उन्हें ज़रूर जगह देंगे दुनिया में अच्छी और वेशक आख़िरत का अजर बहुत बढ़ा है, काश वह (हिज़्रत से रह जाने वाले) जानते। (41)

जिन लोगों ने सब्र किया और वह अपने रब पर भरोसा करते हैं। (42)

وَقَالَ الَّذِينَ أَشْرَكُوا لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا عَبَدْنَا مِنْ دُونِهِ

और कहा	वह लोग जो	उन्होंने ने शिर्क किया	अगर	चाहता अल्लाह	न	हम परस्तिश करते	उस के सिवाए
--------	-----------	------------------------	-----	--------------	---	-----------------	-------------

مِنْ شَيْءٍ نَحْنُ وَلَا آبَاؤُنَا وَلَا حَرَمْنَا مِنْ دُونِهِ مِنْ شَيْءٍ

कोई - किसी शै	हम	और न	हमारे बाप दादा	और न हराम ठहराते हम	उस के (हुक्म के) सिवा	कोई शै
---------------	----	------	----------------	---------------------	-----------------------	--------

كَذَلِكَ فَعَلَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَهَلْ عَلَى الرُّسُلِ إِلَّا

उसी तरह	किया	वह लोग जो	उन से पहले	पस क्या है	पर (ज़िम्मे)	रसूल (जमा)	मगर
---------	------	-----------	------------	------------	--------------	------------	-----

الْبَلْغُ الْمُبِينُ ۝ وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِي كُلِّ أُمَّةٍ رَسُولًا أَنْ

पहुँचा देना	साफ़ साफ़	35	और तहकीक़ हम ने भेजा	में	हर उम्मत	रसूल	कि
-------------	-----------	----	----------------------	-----	----------	------	----

اعْبُدُوا اللَّهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوتَ فَمِنْهُمْ مَنْ هَدَى اللَّهُ

इबादत करो तुम	अल्लाह	और बचो	तागूत (सरकश)	सो उन में से बाज़	जिसे हिदायत दी	अल्लाह
---------------	--------	--------	--------------	-------------------	----------------	--------

وَمِنْهُمْ مَنْ حَقَّتْ عَلَيْهِ الضَّلَالَةُ فَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا

और उन में से	बाज़	साबित हो गई	उस पर	गुमराही	पस चलो फिरो	ज़मीन में	फिर देखो
--------------	------	-------------	-------	---------	-------------	-----------	----------

كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِينَ ۝ إِن تَحْرَضُوا عَلَى هُدَاهُمْ

कैसा	हुआ	अन्जाम	झूटलाने वाले	36	अगर	तुम हिर्स करो (ललचाओ)	उन की हिदायत के लिए
------	-----	--------	--------------	----	-----	-----------------------	---------------------

فَإِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَنْ يُضِلُّ وَمَا لَهُمْ مِنْ نَصِرِينَ ۝

तो वेशक अल्लाह	हिदायत नहीं देता	जिसे	वह गुमराह करता है	और नहीं	उन के लिए	कोई	मददगार
----------------	------------------	------	-------------------	---------	-----------	-----	--------

وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَا يَبْعَثُ اللَّهُ مَنْ يَمُوتُ

और उन्होंने ने कसम खाई	अल्लाह की	अपनी सख़्त	अपनी कसम	नहीं उठाएगा	अल्लाह	जो मर जाता है
------------------------	-----------	------------	----------	-------------	--------	---------------

بَلَىٰ وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝

क्यों नहीं	वादा	उस पर	सच्चा	और लेकिन	अक्सर	लोग	नहीं जानते
------------	------	-------	-------	----------	-------	-----	------------

لَيُبَيِّنَ لَهُمُ الْآذَىٰ يَخْتَلِفُونَ فِيهِ وَلِيَعْلَمَ الَّذِينَ كَفَرُوا

ताकि ज़ाहिर कर दे	उन के लिए	जो	इख़्तिलाफ़ करते हैं	उस में	और ताकि जान लें	जिन लोगों ने कुफ़ किया (काफ़िर)
-------------------	-----------	----	---------------------	--------	-----------------	---------------------------------

أَنَّهُمْ كَانُوا كَذِبِينَ ۝ إِنَّمَا قَوْلُنَا لِشَيْءٍ إِذَا أَرَدْنَاهُ أَنْ نَقُولَ

कि वह	झूटे थे	39	उस के सिवा नहीं	हमारा फ़रमाना	किसी चीज़ को	जब हम उस का इरादा करें	कि हम कहते हैं
-------	---------	----	-----------------	---------------	--------------	------------------------	----------------

لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ۝ وَالَّذِينَ هَاجَرُوا فِي اللَّهِ مِنْ بَعْدِ

उस को	हो जा	तो वह हो जाता है	40	और वह लोग जो	उन्होंने ने हिज़्रत कि	अल्लाह के लिए	उस के बाद
-------	-------	------------------	----	--------------	------------------------	---------------	-----------

مَا ظَلَمُوا لَنُبَوِّنَّهُمْ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً ۖ وَلَا جُزْءَ الْآخِرَةِ أَكْبَرُ لَوْ

कि उन पर जुल्म किया गया	ज़रूर हम उन्हें जगह देंगे	दुनिया में	अच्छी	और वेशक अजर	आख़िरत	काश बहुत बढ़ा
-------------------------	---------------------------	------------	-------	-------------	--------	---------------

كَانُوا يَعْلَمُونَ ۝ ۝ الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ۝

वह जानते	41	वह लोग जो	उन्होंने ने सब्र किया	और अपने रब पर	भरोसा करते हैं	42
----------	----	-----------	-----------------------	---------------	----------------	----

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ إِلَّا رِجَالًا نُوْحِيْ اِلَيْهِمْ فَسَلُّوْا اَهْلَ الذِّكْرِ							
याद रखने वाले	पस पूछो	उन की तरफ	हम वहि करते है	मर्दों के सिवा	तुम से पहले	हम ने भेजे	और नहीं
اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۚ (٤٣) بِالْبَيِّنَاتِ وَالزُّبُرِ ۚ وَاَنْزَلْنَا اِلَيْكَ							
तुम्हारी तरफ	और हम ने नाज़िल की	और किताबें	निशानियों के साथ	43	नहीं जानते	तुम हो	अगर
الذِّكْرِ لِتَبَيِّنَ لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ اِلَيْهِمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ۚ (٤٤)							
44	वह गौर ओ फ़िक्र करें	और ताकि वह	उन की तरफ	जो नाज़िल किया गया	लोगों के लिए	ताकि वाज़ेह कर दो	याददाशत (किताब)
اَفَاَمِنَ الَّذِيْنَ مَكَّرُوْا السَّيِّئَاتِ اَنْ يَّخْسِفَ اللّٰهُ بِهِنَّ الْاَرْضَ							
ज़मीन	उन को	अल्लाह	धंसादे	कि	बुरे	दाओ किए	जिन लोगों ने क्या बेखौफ हो गए है
اَوْ يَاتِيَهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُوْنَ ۚ (٤٥) اَوْ يَأْخُذْهُمْ							
या	उन पर आए	अज़ाब	उस जगह से	वह ख़बर नहीं रखते	45	या	उन्हें पकड़ ले
فِي تَقْلِبِهِمْ فَمَا هُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ۚ (٤٦) اَوْ يَأْخُذْهُمْ عَلَى تَخَوُّفٍ ۚ فَاِنَّ							
में	उन को चलते फिरते	पस नहीं	वह	आजिज़ करने वाले	46	या	उन्हें पकड़ ले
पस वेशक	डराना	पर (बाद)	उन्हें पकड़ ले	या	46	पस	वेशक
رَبَّكُمْ لَرَّءَوْفٌ رَّحِيْمٌ ۚ (٤٧) اَوَلَمْ يَرَوْا اِلَىٰ مَا خَلَقَ اللّٰهُ مِنْ شَيْءٍ							
तुम्हारा रब	इन्तिहाई शफ़ीक	निरहायत रहम करने वाला	47	क्या उन्होंने ने नहीं देखा	तरफ	जो पैदा किया	अल्लाह
يَتَفَقَّهُوْا ظُلُمًا عَنِ الْيَمِيْنِ وَالشَّمَالِ سَجْدًا لِلّٰهِ وَهُمْ							
ढलते है	उस के साए	से	दाएं	और बाएं	सिज्दा करते हुए	अल्लाह के लिए	और वह
دُخِرُوْنَ ۚ (٤٨) وَلِلّٰهِ يَسْجُدُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ مِنْ							
आजिज़ी करने वाले	48	और अल्लाह के लिए सिज्दा करता है	जो	में	आस्मानों	और जो	ज़मीन में
دَابَّةٍ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ۚ (٤٩) يَخَافُوْنَ رَبَّهُمْ مِّنْ فَوْقِهِمْ							
जानदार	और फ़रिश्ते	और वह	तकबुर नहीं करते	49	वह डरते है	अपना रब	से
उन के ऊपर	उन के	ऊपर	उन के	ऊपर	उन के	ऊपर	उन के
وَيَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ ۚ (٥٠) وَقَالَ اللّٰهُ لَا تَخْذَوْا الْهَيْنِ اِثْنَيْنِ ۚ							
और वह (वही) करते है	जो	उन्हें हुकम दिया जाता है	50	और कहा	अल्लाह	न	तुम बनाओ
اِنَّمَا هُوَ اِلٰهُ وَّاحِدٌ ۚ فَاَيَّٰى فَاَرْهَبُوْنَ ۚ (٥١) وَلَهُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ							
इस के सिवा नहीं	वह	माबूद	यकता	पस मुझ ही से	तुम मुझ से डरो	51	और उसी के लिए
आस्मानों में	जो	और उसी के लिए	जो	आस्मानों में	जो	और उसी के लिए	जो
وَالْاَرْضِ وَلَهُ الدِّيْنُ وَاَصْبَابُ ۚ اَفَغَيْرَ اللّٰهِ تَتَّقُوْنَ ۚ (٥٢) وَمَا بِكُمْ							
और ज़मीन	और उसी के लिए	इताज़त ओ इबादत	लाज़िम	तो क्या अल्लाह के सिवा	तुम डरते हो	52	और जो
तुम्हारे पास	और जो	52	तुम डरते हो	तुम डरते हो	तुम डरते हो	52	तुम डरते हो
مِّنْ نّعْمَةٍ فَمِنَ اللّٰهِ ثُمَّ اِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فَاِلَيْهِ تَجَرُّوْنَ ۚ (٥٣)							
कोई नेमत	अल्लाह की तरफ से	फिर	जब	तुम्हें पहुँचती है	तक्लीफ	तो उस की तरफ	तुम रोते (चिल्लाते) हो
53	तुम रोते (चिल्लाते) हो	तो उस की तरफ	तक्लीफ	तुम्हें पहुँचती है	जब	फिर	अल्लाह की तरफ से
ثُمَّ اِذَا كُشِفَ الضُّرُّ عَنْكُمْ اِذَا فَرِيقٌ مِّنْكُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُوْنَ ۚ (٥٤)							
फिर	जब	खोलदे (दूर कर देता है)	सख्ती	तुम से	जब (उस वक़्त) एक फ़रीक	तुम में से	वह शरीक करता है
54	वह शरीक करता है	अपने रब के साथ	तुम में से	जब (उस वक़्त) एक फ़रीक	तुम से	सख्ती	खोलदे (दूर कर देता है)

और हम ने तुम से पहले भी मर्दों के सिवा (रसूल) नहीं भजे, हम वहि करते है उन की तरफ, याद रखने वालों से पूछो अगर तुम नहीं जानते (कि उन रसूलों को हम ने भेजा था)। (43)

निशानियों और किताबों के साथ, और हम ने तुम्हारी तरफ किताब नाज़िल कि है ताकि लोगों के लिए वाज़ेह कर दो जो उन की तरफ नाज़िल किया गया है, ताकि वह गौर ओ फ़िक्र करें। (44)

जिन लोगों ने बुरे दाओ किए क्या वह उस से बेखौफ हो गए है कि अल्लाह उन को ज़मीन में धंसा दे? या उन पर अज़ाब आजाए जहाँ से उन को ख़बर ही न हो, (45)

या वह उन्हें पकड़ ले चलते फिरते, पस वह (अल्लाह) को आजिज़ करने वाले नहीं, (46)

या उन्हें डराने के बाद पकड़ ले, पस वेशक तुम्हारा रब इन्तिहाई शफ़ीक निहायत रहम तरने वाला है। (47)

क्या उन्होंने ने नहीं देखा? कि जो चीज़ अल्लाह ने पैदा की है, उस के साए ढलते है, दाएं से और बाएं से, अल्लाह के लिए सिज्दा करते हुए, और वह आजिज़ी करने वाले है। (48)

और अल्लाह को सिज्दा करता है जो भी आस्मानों में और जो भी जानदारों में से ज़मीन में है और फ़रिश्ते भी, और वह तकबुर नहीं करते। (49)

वह अपने रब से डरते है (जो) उन के ऊपर है, और वह वही करते है जो उन्हें हुकम दिया जाता है। (50)

और अल्लाह ने कहा कि न तुम बनाओ दो माबूद। इस के सिवा नहीं कि वह माबूद यकता है, पस मुझ ही से डरो। (51)

और उसी के लिए है जो आस्मानों में और जो ज़मीन में है और उसी के लिए इताज़त ओ इबादत लाज़िम है, तो क्या अल्लाह के सिवा (किसी और से) तुम डरते हो? (52)

और तुम्हारे पास जो कोई नेमत है सो अल्लाह की तरफ से है, फिर जब तुम्हें तक्लीफ पहुँचती है तो उसी की तरफ तुम रोते चिल्लाते हो। (53)

फिर वह जब तुम से सख्ती दूर कर देता है तो तुम में से एक फ़रीक उस वक़्त अपने रब के साथ शरीक करने लगता है, (54)

ताकि वह उस की नाशुकी करें जो हम ने उन्हें दिया, तो तुम फ़ाइदा उठाओ, पस अ़नक़रीब तुम जान लोगे। (55) और जो हम ने उन्हें दिया उस में से वह उन के लिए हिस्सा मक़रर करते हैं, जिन (मावूदों) को वह नहीं जानते, अल्लाह की क़सम तुम से उस (के बारे) में ज़रूर पूछा जाएगा जो तुम झूट बान्धते थे। (56) और वह अल्लाह के लिए बेटियां ठहराते हैं, वह पाक है, और अपने लिए वह जो उन का दिल चाहता है। (57) और जब उन में से किसी को लड़की की खुशख़बरी दी जाती है तो उस का चहरा सियाह पड़ जाता है और वह गुस्से से भर जाता है। (58) लोगों से छुपता फिरता है उस “बुराई” की खुशख़बरी के सबब जो उसे दी गई (अब सोचता है) आया उस को रुस्वाई के साथ रखे या उस को मिट्टी में दफ़न कर दे, याद रखो! बुरा है जो वह फैसला करते हैं। (59) जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते उन का हाल बुरा है, और अल्लाह की शान बुलन्द है, और वह ग़ालिव हिक्मत वाला है। (60) और अगर अल्लाह गिरिफ़्त करे लोगों की उन के जुल्म के सबब तो वह ज़मीन पर कोई चलने वाला न छोड़े, लेकिन वह उन्हें ढील देता है एक मुद्दे मुक़रर तक, फिर जब उन का वक़्त आगया, न वह एक घड़ी पीछे हटेंगे, और न आगे बढ़ेंगे। (61) और वह अल्लाह के लिए ठहराते हैं जो अपने लिए न पसन्द करते हैं, और उन की ज़बानें झूट बयान करती हैं कि उन के लिए भलाई है, लाज़िमी बात है कि उन के लिए जहन्नम है, बेशक वह (जहन्नम में) आगे भेजे जाएंगे। (62) अल्लाह की क़सम! तहकीक़ हम ने भेजे तुम से पहले उम्मतों की तरफ़ (रसूल), फिर शैतान ने उन के अ़मल उन्हें अच्छे कर दिखाए, पस आज वह उन का रफ़ीक़ है, और उन के लिए दर्दनाक अज़ाब है। (63) और हम ने तुम पर किताब नहीं उतारी मगर (सिर्फ़) इस लिए कि तुम वाज़ेह कर दो जिस में उन्होंने ने इख़तिलाफ़ किया, और हिदायत ओ रहमत उन के लिए जो ईमान लाए। (64)

لِيَكْفُرُوا بِمَا آتَيْنَهُمْ ۖ فَتَمَتَّعُوا ۖ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ﴿٥٥﴾ وَيَجْعَلُونَ									
और वह मुक़रर करते हैं	55	तुम जान लोगे	पस अ़नक़रीब	तो तुम फ़ाइदा उठा लो	हम ने उन्हें दिया	उस से जो	ताकि वह नाशुकी करें		
لِمَا لَا يَعْلَمُونَ نَصِيبًا مِّمَّا رَزَقْنَاهُمْ ۖ تَاللّٰهِ لَتُسْأَلُنَّ عَمَّا									
उस से जो	तुम से ज़रूर पुछा जाएगा	अल्लाह की क़सम	हम ने उन्हें दिया	उस से जो	हिस्सा	वह नहीं जानते	उस के लिए जो		
كُنْتُمْ تَفْتَرُونَ ﴿٥٦﴾ وَيَجْعَلُونَ لِلّٰهِ الْبَنَاتِ سُبْحَنَهُ ۚ وَلَهُمْ مَا يَشْتَهُونَ ﴿٥٧﴾									
57	उन का दिल चाहता है	जो	और अपने लिए	वह पाक है	बेटियां	और वह बनाते (ठहराते) अल्लाह के लिए	56	तुम झूट बान्धते थे	
وَإِذَا بُشِّرَ أَحَدُهُم بِالْأُنْثَىٰ ظَلَّ وَجْهُهُ مُسْوَدًّا وَهُوَ كَظِيمٌ ﴿٥٨﴾									
58	गुस्से से भर जाता है	और वह	सियाह	उस का चेहरा	हो जाता (पड़ जाता है)	लड़की की	उन में से किसी को	खुशखबरी दी जाए	और जब
يَتَوَارَىٰ مِنَ الْقَوْمِ مِنْ سُوءِ مَا بُشِّرَ بِهِ ۚ أَيُمْسِكُهُ عَلَىٰ هُونٍ أَمْ									
या	रुस्वाई के साथ	या उस को रखे	खुशखबरी दी गई जिस की	जो	बुराई	से - सबब	कौम (लोग)	से	छुपता फिरता है
يَدُسُّهُ فِي التُّرَابِ ۖ أَلَا سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ﴿٥٩﴾ لِلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ									
ईमान नहीं रखते	जो लोग	59	जो वह फैसला करते हैं	बुरा है	याद रखो	मिट्टी में	दवादे (दफ़न करदे)		
بِالْآخِرَةِ مَثَلُ السَّوْءِ ۚ وَلِلّٰهِ الْمَثَلُ الْأَعْلَىٰ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٦٠﴾									
60	हिक्मत वाला	ग़ालिव	और वह	शान बुलन्द	और अल्लाह के लिए	बुरा	हाल	आख़िरत पर	
وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ بِظُلْمِهِم مَّا تَرَكَ عَلَيْهَا مِنْ دَابَّةٍ وَلَكِنْ									
और लेकिन	चलने वाला	कोई	उस (ज़मीन) पर	न छोड़े वह	उन के जुल्म के सबब	लोग	अल्लाह	गिरिफ़्त करे	और अगर
يُؤَخِّرُهُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۖ فَإِذَا جَاءَ أَجْلُهُمْ لَا يَسْتَخِرُونَ									
न पीछे हटेंगे	उन का वक़्त	आगया	फिर जब	मुक़रर	एक मुद्दत	तक	वह ढील देता है उन्हें		
سَاعَةً ۚ وَلَا يَسْتَقْدِمُونَ ﴿٦١﴾ وَيَجْعَلُونَ لِلّٰهِ مَا يَكْرَهُونَ وَتَصِفُ									
और बयान करती हैं	वह अपने लिए नापसन्द करते हैं	जो	अल्लाह के लिए	और वह बनाते (ठहराते) हैं	61	और न आगे बढ़ेंगे	एक घड़ी		
السَّيِّئُهُمُ الْكَذِبَ أَنَّ لَهُمُ الْحُسْنَىٰ ۚ لَا جَرَمَ أَنَّ لَهُمُ النَّارَ									
जहन्नम	उन के लिए	कि	लाज़िमी बात	भलाई	उन के लिए	कि	झूट	उन की ज़बानें	
وَأَنَّهُمْ مُّفْرَطُونَ ﴿٦٢﴾ تَاللّٰهِ لَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَىٰ أُمَمٍ مِّن قَبْلِكَ									
तुम से पहले	उम्मतें	तरफ़	तहकीक़ हम ने भेजे	अल्लाह की क़सम	62	आगे भेजे जाएंगे	और बेशक वह		
فَرَيْنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ أَعْمَالَهُمْ فَهُوَ وَلِيُّهُمْ الْيَوْمَ وَلَهُمْ									
और उन के लिए	आज	उन का रफ़ीक़	पस वह	उन के आमाल	शैतान	उन के लिए	फिर अच्छा कर दिखाया		
عَذَابٍ أَلِيمٌ ﴿٦٣﴾ وَمَا أُنْزِلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ إِلَّا لِتُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِي									
जो - जिस	उन के लिए	इस लिए कि तुम वाज़ेह कर दो	मगर	किताब	तुम पर	उतारी हम ने	और नहीं	63	दर्दनाक अज़ाब
اٰخْتَلَفُوا فِيهِ ۚ وَهُدًى وَرَحْمَةً لِّلْقَوْمِ يُؤْمِنُونَ ﴿٦٤﴾									
64	वह ईमान लाए हैं	उन लोगों के लिए	और रहमत	और हिदायत	उस में	उन्होंने ने इख़तिलाफ़ किया			

ع ١٥

وَاللّٰهُ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْيَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا إِنَّ فِيْ													और अल्लाह
मैं	वेशक	उस की मौत	बाद	ज़मीन	उस से	फिर जिन्दा किया	पानी	आस्मान	से	उतारा			
ذٰلِكَ لَايَةٌ لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ﴿٦٥﴾ وَإِنَّ لَكُمْ فِي الْأَنْعَامِ لَعِبْرَةً نُّسْقِيكُم													
हम पिलाते हैं तुम को		अलबत्ता इब्रत	चौपाए	मैं	तुम्हारे लिए	और वेशक	65	वह सुनते हैं	लोगों के लिए	निशानी	उस		
مِمَّا فِيْ بُطُوْنِهِ مِنْ بَيْنِ فَرْثٍ وَدَمٍ لَّبَنًا خَالِصًا سَائِغًا لِلشَّرْبَيْنِ ﴿٦٦﴾													
66		पीने वालों के लिए	खुशगवार	खालिस	दूध	और खून	गोबर	दरमियान	से	उन के पेट (जमा)	मैं	उस से जो	
وَمِنْ ثَمَرَاتِ النَّخِيْلِ وَالْأَعْنَابِ تَتَّخِذُوْنَ مِنْهُ سَكَرًا وَرِزْقًا													
और रिज़्क	शराब		उस से	तुम बनाते हो		और अंगूर		खजूर		फल (जमा)	और से		
حَسَنًا إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَايَةٌ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿٦٧﴾ وَأَوْحَى رَبُّكَ إِلَى													
तरफ़ - को	तुम्हारा रब	और इल्हाम किया	67	अक़ल रखते हैं	लोगों के लिए		निशानी	उस	मैं	वेशक	अच्छा		
النَّحْلِ أَنْ اتَّخِذِيْ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا وَمِنَ الشَّجَرِ وَمِمَّا يَعْرِشُوْنَ ﴿٦٨﴾													
68		छतरियां बनाते हैं	और उस से जो	दरख़्त	और से - में	घर (जमा)	पहाड़ (जमा)	से - में	तू बनाले	कि	शहद की मक्खी		
ثُمَّ كُلِيْ مِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ فَاسْلُكِيْ سُبُلَ رَبِّكِ ذُلُلًا يَخْرُجُ مِنْ													
से	निकलती है	नर्म ओ हमवार	अपना रब	रस्ते	फिर चल		हर किस्म के फल		से - के	खा	फिर		
بُطُوْنِهَا شَرَابٌ مُّخْتَلِفٌ أَلْوَانُهُ فِيْهِ شِفَاءٌ لِّلنَّاسِ إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ													
इस	मैं	वेशक	लोगों के लिए	शिफ़ा	उस में	उस के रंग	सुख़तलिफ़		पीने की एक चीज़		उन के पेट (जमा)		
لَايَةٌ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٦٩﴾ وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ ثُمَّ يَتَوَفَّكُم مِّنْكُمْ													
जो	और तुम में से बाज़	वह मौत देता है तुम्हें	फिर	पैदा किया तुम्हें		और अल्लाह	69	सोचते हैं		लोगों के लिए	निशानियां		
يُرَدُّ إِلَىْ أَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْ لَا يَعْلَمَ بَعْدَ عِلْمٍ شَيْئًا إِنَّ اللَّهَ عَلِيْمٌ													
जानने वाला	वेशक अल्लाह	कुछ	इल्म	बाद	वह वे इल्म हो जाए		ताकि	नाकारा - नाकिस उम्र		लौटाया (पहुँचाया) जाता है तरफ़			
قَدِيْرٌ ﴿٧٠﴾ وَاللّٰهُ فَضَّلَ بَعْضَكُمْ عَلَى بَعْضٍ فِي الرِّزْقِ فَمَا الَّذِيْنَ													
वह लोग जो	पस नहीं	रिज़्क	मैं	बाज़	पर	तुम में से बाज़		फज़ीलत दी	और अल्लाह	70	कुदरत वाला		
فُضِّلُوْا بِرَأْدَى رِزْقِهِمْ عَلَى مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَهُمْ فِيْهِ سَوَاءٌ ۖ													
बराबर	उस में	पस वह	उन के हाथ	जो मालिक हुए		पर - को	अपना रिज़्क	लौटा देने वाले		फज़ीलत दिए गए			
أَفَبِعِزَّةِ اللَّهِ يَجْحَدُوْنَ ﴿٧١﴾ وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ أَنْفُسِكُمْ أَزْوَاجًا													
बीवियां		तुम में से	से	तुम्हारे लिए	बनाया	और अल्लाह	71	वह इन्कार करते हैं		अल्लाह	पस क्या नेमत से		
وَجَعَلَ لَكُمْ مِّنْ أَزْوَاجِكُمْ بَنِيْنَ وَحَفَدَةً وَرَزَقَكُمْ مِّنَ													
से	और तुम्हें अ़ता की		और पोते	बेटे	तुम्हारी बीवियां		से	तुम्हारे लिए	और बनाया (पैदा किया)				
الطَّيِّبِ أَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُوْنَ وَبِنِعْمَتِ اللَّهِ هُمْ يَكْفُرُوْنَ ﴿٧٢﴾													
72	इन्कार करते हैं		वह	और अल्लाह की नेमत		वह मानते हैं		तो क्या वातिल को		पाक चीज़			

और अल्लाह ने आस्मान से पानी उतारा, फिर उस से ज़मीन को उस की मौत (बन्जर होने) के बाद जिन्दा किया, वेशक उस में उन लोगों के लिए निशानी है जो सुनते हैं। (65)

और वेशक तुम्हारे लिए चौपाए में (मुकामे) इब्रत है, हम तुम्हें पिलाते हैं दूध खालिस उस से जो गोबर और खून के दरमियान उन के पेट में है, पीने वालों के लिए खुशगवार। (66)

और खजूर और अंगूर के फलों से (रस) तुम उस से शराब बनाते हो, और अच्छा रिज्क (हासिल करते हो) वेशक उस में निशानी है उन लोगों के लिए जो अक्ल रखते हैं। (67)

और तुम्हारे रब ने शहद की मक्खी को इल्हाम किया कि तू पहाड़ों में घर बना ले, और दरख्तों में, और उस जगह जहां वह छतरियां बनाते हैं। (68)

फिर खा हर किस्म के फलों से, फिर अपने रब के नर्म ओ हमवार रसतों पर चल, उन के पेटों से पीने की एक चीज़ निकलती है, (शहद) उस के रंग मुख्तलिफ़ है, उस में लोगों के लिए शिफा है, वेशक उस में उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो सोचते हैं। (69)

और अल्लाह ने तुम्हें पैदा किया, फिर वह तुम्हें मौत देता है, और तुम में से बाज़ को नाकारा उम्र की तरफ पहुँचाया जाता है ताकि वह कुछ इल्म के बाद वेइल्म हो जाए, वेशक अल्लाह जानने वाला, कुदरत वाला है। (70)

और अल्लाह ने फज़ीलत दी तुम में से बाज़ को बाज़ पर रिज्क में, पस जिन लोगों को फज़ीलत दी गई वह अपना रिज्क लौटाने (देने वाले) नहीं उन्हें जिन के मालिक उन के हाथ हैं (ममलूकों को) कि वह उस में बराबर हो जाएं, पस क्या वह अल्लाह की नेमत का इन्कार करते हैं? (71)

और अल्लाह ने तुम में से तुम्हारे लिए तुम्हारी वीवियां बनाई, और तुम्हारी वीवियों से तुम्हारे लिए पैदा किए बेटे और पोते, और तुम्हें पाक चीज़ें अता की, तो क्या वह वातिल को मानते हैं? और अल्लाह की नेमत का वह इन्कार करते हैं। (72)

और अल्लाह के सिवा उस की परस्तिश करते हैं, जिन्हें इख्तियार नहीं उन के लिए रिज़्क का आस्मानों और ज़मीन से कुछ भी, और न वह कुदरत रखते हैं। (73)

पस तुम चस्यां न करो अल्लाह पर मिसालें, वेशक अल्लाह जानता है, और तुम नहीं जानते। (74)

अल्लाह ने एक मिसाल बयान की (किसी की) मिल्क में आए हुए गुलाम की जो किसी शै पर इख्तियार नहीं रखता, और (दूसरा) वह जिसे हम ने अच्छा रिज़्क दिया सो वह उस से पोशीदा और ज़ाहिर खर्च करता है, क्या वह (दोनों) बराबर है? तमाम तारीफें अल्लाह के लिए हैं, बल्कि उन में से अक्सर नहीं जानते। (75)

और अल्लाह ने दो आदमियों की एक मिसाल बयान की उन में से एक गूंगा है, वह इख्तियार नहीं रखता किसी शै पर, और वह अपने आका पर बोल है, वह जहां कहीं उसे भेजे वह कोई भलाई न लाए, क्या बराबर है यह और वह? जो अदल का हुक्म देता है, और वह सीधी राह पर है। (76)

और अल्लाह के लिए हैं आस्मानों और ज़मीन की पोशीदा बातें, और क़ियामत का आना सिर्फ़ ऐसे हैं जैसे आँख का झपकना, या वह उस से भी ज़ियादा करीब है, वेशक अल्लाह हर शै पर कुदरत वाला है। (77)

और अल्लाह ने तुम्हें तुम्हारी माओं के पेटों से निकाला तुम कुछ भी न जानते थे, और अल्लाह ने तुम्हारे बनाए कान, और आँखें, और दिल, ताकि तुम शुक्र अदा करो। (78)

क्या उन्होंने ने परिन्दों को नहीं देखा आस्मान की फ़िज़ा में हुक्म के पाबन्द, उन्हें (कोई) नहीं थामता सिवाए अल्लाह के, वेशक उस में ईमान लाने वाले लोगों के लिए निशानियां हैं। (79)

وَيَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَهُمْ رِزْقًا مِّنَ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ شَيْئًا وَلَا يَسْتَطِيعُونَ ﴿٧٣﴾ فَلَا تَضْرِبُوا								
और परस्तिश करते हैं	से	सिवाए	अल्लाह	जो	इख्तियार नहीं	उन के लिए	रिज़्क	से
आस्मानों	और ज़मीन	कुछ	और न वह कुदरत रखते हैं	73	पस न चस्यां करो			
لِلَّهِ الْأَمْثَالُ إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٧٤﴾ ضَرَبَ								
अल्लाह के लिए	मिसालें	वेशक	अल्लाह	जानता है	और तुम	नहीं जानते	74	बयान किया
अल्लाह	एक मिसाल	एक गुलाम	मिल्क में आया हुआ	वह इख्तियार नहीं रखता	पर	किसी शै	और जो	हम ने उसे रिज़्क दिया
مِنَّا رِزْقًا حَسَنًا فَهُوَ يُنْفِقُ مِنْهُ سِرًّا وَجَهْرًا هَلْ يَسْتَوْنَ								
अपनी तरफ़ से	रिज़्क	अच्छा	सो वह	खर्च करता है	उस से	पोशीदा	और ज़ाहिर	क्या
الْحَمْدُ لِلَّهِ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٧٥﴾ وَضَرَبَ								
वह बराबर है	तमाम तारीफ़	अल्लाह के लिए	बल्कि	उन में से अक्सर	नहीं जानते	75	और बयान किया	
اللَّهُ مَثَلًا رَّجُلَيْنِ أَحَدُهُمَا أَبْكَمُ لَا يَقْدِرُ عَلَى شَيْءٍ وَهُوَ								
अल्लाह	एक मिसाल	दो आदमी	उन में से एक	गूंगा	वह इख्तियार नहीं रखता	किसी शै पर	और वह	
كُلٌّ عَلَىٰ مَوْلَاهُ أَيْنَمَا يُوَجِّهُهُ لَا يَأْتِ بِخَيْرٍ هَلْ يَسْتَوِي								
बोझ	पर	अपना आका	जहां कहीं	वह भेजे उस को	वह न लाए	कोई भलाई	क्या	बराबर
هُوَ وَمَنْ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَهُوَ عَلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٧٦﴾								
वह - यह	और जो	हुक्म देता है	अदल के साथ	और वह	पर	राह	सीधी	76
وَاللَّهُ غَيْبُ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَمَا أَمْرُ السَّاعَةِ إِلَّا								
और अल्लाह के लिए पोशीदा बातें	आस्मानों	और ज़मीन	और नहीं	काम (आना) क़ियामत	मगर (सिर्फ़)			
كَلَمَحِ الْبَصَرِ أَوْ هُوَ أَقْرَبُ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٧٧﴾								
जैसे झपकना आँख	या	वह	उस से भी करीब	वेशक अल्लाह	पर	हर शै	कुदरत वाला	77
وَاللَّهُ أَخْرَجَكُمْ مِنْ بُطُونِ أُمَّهَاتِكُمْ لَا تَعْلَمُونَ شَيْئًا								
और अल्लाह	तुम्हें निकाला	से	पेट (जमा)	तुम्हारी माँ	तुम न जानते थे	कुछ भी		
وَجَعَلَ لَكُمْ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٧٨﴾								
और उस ने बनाया	तुम्हारे लिए	कान	और आँखें	और दिल (जमा)	ताकि तुम	तुम शुक्र अदा करो	78	
أَلَمْ يَرَوْا إِلَى الطَّيْرِ مُسَخَّرَاتٍ فِي جَوْ السَّمَاءِ مَا يُمَسِّكُهُنَّ								
क्या उन्होंने ने नहीं देखा	तरफ़	परिन्दा	हुक्म के पाबन्द	में	आस्मान की फ़िज़ा	नहीं	थामता उन्हें	
إِلَّا اللَّهُ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٧٩﴾								
सिवाए	अल्लाह	वेशक	में	उस	निशानियां	लोगों के लिए	ईमान लाते हैं	79

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ بُيُوتِكُمْ سَكَنًا وَجَعَلَ لَكُمْ مِّنْ جُلُودِ									
खालें	से	तुम्हारे लिए	और बनाया	सुकूनत (रहने) की जगह	तुम्हारे घरों	से	तुम्हारे लिए	बनाया	और अल्लाह
الْأَنْعَامِ بُيُوتًا تَسْتَخِفُّونَهَا يَوْمَ ظَعْنِكُمْ وَيَوْمَ إِقَامَتِكُمْ ^٧									
चौपाए		घर (डेर)	तुम हल्का पाते हो उन्हें		अपने कूच के दिन		और दिन	अपना कियाम	
وَمِنْ أَصْوَابِهَا وَأَوْبَارِهَا وَأَشْعَارِهَا أَثَا وَمَتَاعًا									
और से	उन की ऊन		और उन की पशम		और उन के बाल		सामान	और वरतने की चीज़ें	
إِلَى حَيْنٍ ۝ (٨٠) وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِمَّا خَلَقَ ظِلَالًا وَجَعَلَ لَكُمْ									
तक	एक वक़्त (मुदत)	80	और अल्लाह	बनाया	तुम्हारे लिए	उस से जो	उस ने पैदा किया	साए	और बनाया तुम्हारे लिए
مِّنَ الْجِبَالِ أَكْنَانًا وَجَعَلَ لَكُمْ سَرَابِيلَ تَقِيَكُمُ الْحَرَّ									
से	पहाड़ों	पनाह गाहें		और बनाया	तुम्हारे लिए	कुर्ते	बचाते हैं तुम्हें	गर्मी	
وَسَرَابِيلَ تَقِيَكُمُ بِأَسْكُمُ كَذَلِكَ يُتِمُّ نِعْمَتَهُ عَلَيْكُمْ									
और कुर्ते	बचाते हैं तुम्हें	तुम्हारी लड़ाई		उसी तरह	वह मुकम्मिल करता है		अपनी नेमत	तुम पर	
لَعَلَّكُمْ تُسْلِمُونَ ۝ (٨١) فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلْغُ									
ताकि तुम	फरमावरदार बनो	81	फिर अगर	वह फिर जाएं	तो इस के सिवा नहीं		तुम पर	पहुँचा देना	
الْمُبِينُ ۝ (٨٢) يَعْرِفُونَ نِعْمَتَ اللَّهِ ثُمَّ يُنْكِرُونَهَا وَأَكْثَرُهُمُ									
खोल कर (साफ़ साफ़)	82	वह पहचानते हैं		नेमत	अल्लाह	फिर	मुन्किर हो जाते हैं उस के	और उन के अक्सर	
الْكُفْرُونَ ۝ (٨٣) وَيَوْمَ نَبْعَثُ مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا ثُمَّ لَا يُؤْذَنُ									
काफिर (जमा) नाशुक्रें	83	और जिस दिन	हम उठाएंगे	से	हर	उम्मत	एक गवाह	फिर	न इजाज़त दी जाएगी
لِلَّذِينَ كَفَرُوا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُونَ ۝ (٨٤) وَإِذَا رَأَى الَّذِينَ									
वह लोग	उन्होंने ने कुफ़ क्या (काफिर)	और न वह		उज़र कुबूल किए जाएंगे		84	और जब	देखेंगे	वह लोग जो
ظَلَمُوا الْعَذَابَ فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ وَلَا هُمْ يُنْظَرُونَ ۝ (٨٥)									
उन्होंने ने जुल्म किया (ज़ालिम)	अज़ाब	फिर न हल्का किया जाएगा		उन से	और न	वह	मोहलत दी जाएगी	85	
وَإِذَا رَأَى الَّذِينَ أَشْرَكُوا شُرَكَاءَهُمْ قَالُوا رَبَّنَا هَؤُلَاءِ									
और जब	देखेंगे	वह लोग जो	वह शरीक		अपने शरीक		वह कहेंगे	ऐ हमारे रब	यह है
شُرَكَائُنَا الَّذِينَ كُنَّا نَدْعُوا مِنْ دُونِكَ فَأَلْقَوْا									
हमारे शरीक	वह जो कि	हम पुकारते थे		तेरे सिवा		फिर वह डालेंगे			
إِلَيْهِمُ الْقَوْلَ إِنَّكُمْ لَكَاذِبُونَ ۝ (٨٦) وَأَلْقُوا إِلَى اللَّهِ									
उन की तरफ़	कौल	वेशक तुम	अलबत्ता तुम झूटे		86	और वह डालेंगे	तरफ़ (सामने)	अल्लाह	
يَوْمَئِذٍ السَّلَامِ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ۝ (٨٧)									
उस दिन	आजिज़ी	और गुम हो जाएगा	उन से	जो	इफतिरा करते (झूट घड़ते थे)		87		

और अल्लाह ने तुम्हारे लिए बनाया तुम्हारे घरों को रहने की जगह, और तुम्हारे लिए चौपाए की खालों से डेर बनाए, जिन्हें तुम हल्का फुलका पाते हो अपने कूच के दिन और अपने कियाम के दिन, और उन की ऊन, और पशम, और उन के बालों से (बनाए) सामान और वरतने की चीज़ें एक मुदते मुक़ररा तक। (80)

और अल्लाह ने जो पैदा किया उस से तुम्हारे लिए साये बनाए, और तुम्हारे लिए बनाई पहाड़ों से पनाह गाहें, और उस ने तुम्हारे लिए कुर्ते बनाए जो तुम्हारे लिए गर्मी का बचाओ हैं और कुर्ते (जिरहें हैं) जो तुम्हारे लिए बचाओ हैं तुम्हारी लड़ाई में, उसी तरह वह तुम पर अपनी नेमत मुकम्मिल करता है ताकि तुम फरमावरदार बनो। (81)

फिर अगर वह फिर जाएं तो उस के सिवा नहीं कि तुम पर (तुम्हारा ज़िम्मा) सिर्फ़ खोल कर पहुँचा देना है। (82)

वह अल्लाह की नेमत पहचानते हैं, फिर उस के मुन्किर हो जाते हैं, और उन में से अक्सर नाशुक्रें हैं। (83)

और जिस दिन हर उम्मत से हम एक गवाह उठाएंगे फिर न इजाज़त दी जाएगी काफिरों को और न उन से उज़र कुबूल किए जाएंगे। (84)

और (याद करो) जब ज़ालिम अज़ाब देखेंगे फिर न उन से (अज़ाब) हल्का किया जाएगा और न उन्हें मोहलत दी जाएगी। (85)

और (याद करो) जब मुशर्रिक अपने शरीकों को देखेंगे तो वह कहेंगे ऐ हमारे रब! यह हैं हमारे शरीक जिन्हें हम तेरे सिवा पुकारते थे, फिर वह (उन के शरीक) उन की तरफ़ डालेंगे कौल (जवाब देंगे कि) वेशक तुम झूटे हो। (86)

और वह उस दिन अल्लाह के सामने आजिज़ी (का पैगाम) डालेंगे और उन से गुम हो जाएगा (भूल जाएंगे) जो वह झूट घड़ते थे। (87)

और जिन लोगों ने कुफ़ किया और अल्लाह की राह से रोका हम उन के लिए अज़ाब पर अज़ाब बढ़ादेंगे, क्योंकि वह फ़साद करते थे। (88) और जिस दिन हम उठाएंगे हर उम्मत में उन पर उन ही में से एक गवाह, और हम आप (स) को इन सब पर गवाह लाएंगे, और हम ने आप (स) पर कुरआन नाज़िल किया, हर शै का मुफ़ससिल वयान, और हिदायत ओ रहमत, और खुशख़बरी मुसलमानों के लिए। (89)

वेशक अल्लाह अदल ओ एहसान का हुक्म देता है और रिशतेदारों को (उन के हुक्क) देने का और मना करता है बेहयाई से और नाशाइस्ता कामों से और सरकशी से, तुम्हें नसीहत करता है ताकि तुम ध्यान करो। (90)

और जब तुम (पुख्ता) अहद करलो तो अल्लाह का अहद पूरा करो, और कस्में पुख्ता करने के बाद उन को न तोड़ो, और तहकीक़ तुम ने अपने ऊपर अल्लाह को ज़ामिन बनाया है, वेशक अल्लाह जानता है जो तुम करते हो। (91)

और तुम उस औरत की तरह न होजाना जिस ने अपना सूत मज़बूत करने (कातने) के बाद तुकड़े तुकड़े तोड़ डाला, तुम बनाते हो अपनी कस्मों को अपने दरमियान दख़ल देने का बहाना कि एक गिरोह दूसरे गिरोह पर ग़ालिब आजाए, उस के सिवा नहीं कि अल्लाह तुम्हें आजमाता है, और वह रोज़े क़ियामत तुम पर ज़रूर ज़ाहिर करदेगा जिस में तुम इख़्तिलाफ़ करते थे। (92)

और अगर अल्लाह चाहता तो अलबत्ता तुम्हें एक उम्मत बनादेता, लेकिन वह गुमराह करता है जिस को वह चाहता है, और हिदायत देता है जिस को वह चाहता है, और तुम से उस की वाबत ज़रूर पूछा जाएगा जो तुम करते थे। (93)

الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ زِدْنَاهُمْ عَذَابًا						
अज़ाब	हम बढ़ादेंगे	अल्लाह की राह	से	और रोका	उन्होंने ने कुफ़ किया	वह लोग जो
فَوْقَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوا يُفْسِدُونَ ﴿٨٨﴾ وَيَوْمَ نَبْعَثُ فِي كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا عَلَيْهِمْ مِنْ أَنْفُسِهِمْ وَجِئْنَا بِكَ شَهِيدًا						
पर	अज़ाब	क्योंकि	वह फ़साद करते थे	88	और जिस दिन	हम उठाएंगे
हर उम्मत	एक गवाह	उन पर	उन ही में से	और हम लाएंगे	आप (स) को	गवाह
عَلَى هَؤُلَاءِ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ تِبْيَانًا لِكُلِّ شَيْءٍ						
इन सब पर	और हम ने नाज़िल की	आप पर	किताब (कुरआन)	(मुफ़ससिल) वयान	हर शै का	
और हिदायत	और रहमत	और खुशख़बरी	मुसलमानों के लिए	89	वेशक अल्लाह	हुक्म देता है
بِالْعَدْلِ وَالْإِحْسَانِ وَإِيتَايَ ذِي الْقُرْبَىٰ وَيَنْهَىٰ عَنِ						
अदल का	और एहसान	और देना	रिशतेदार	और मना करता है	से	
الْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿٩٠﴾						
बेहयाई	और नाशाइस्ता	और सरकशी	तुम्हें नसीहत करता है	ताकि तुम	ध्यान करो	90
وَأَوْفُوا بِعَهْدِ اللَّهِ إِذَا عَاهَدْتُمْ وَلَا تَنْقُضُوا الْأَيْمَانَ						
और पूरा करो	अल्लाह का अहद	जब	तुम अहद करो	और न तोड़ो	कस्में	
بَعْدَ تَوْكِيدِهَا وَقَدْ جَعَلْتُمُ اللَّهَ عَلَيْكُمْ كَفِيلًا إِنَّ اللَّهَ						
बाद	उन को पुख्ता करना	और तहकीक़ तुम ने बनाया	अल्लाह	अपने ऊपर	ज़ामिन	वेशक अल्लाह
يَعْلَمُ مَا تَفْعَلُونَ ﴿٩١﴾ وَلَا تَكُونُوا كَالَّتِي نَقَضَتْ غَزْلَهَا						
जानता है	जो तुम करते हो	91	और तुम न हो जाओ	औरत की तरह	उस ने तोड़ा	अपना सूत
مِنْ بَعْدِ قُوَّةٍ أَنْكَاثًا تَتَّخِذُونَ أَيْمَانَكُمْ دَخَلًا بَيْنَكُمْ أَنْ						
बाद	कुव्वत (मज़बूती)	तुकड़े तुकड़े	तुम बनाते हो	अपनी कस्में	दख़ल का बहाना	अपने दरमियान
تَكُونُ أُمَّةٌ هِيَ أَرْبَىٰ مِنْ أُمَّةٍ إِنَّمَا يَبْلُوكُمُ اللَّهُ بِهِ وَلِيَبَيِّنَنَّ						
हो जाए	एक गिरोह	वह	बड़ा हुआ (ग़ालिब)	से	दूसरा गिरोह	उस के सिवा नहीं है तुम्हें
لَكُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ مَا كُنْتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ﴿٩٢﴾ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ						
तुम पर	रोज़े क़ियामत	जो	तुम थे	उस में	इख़्तिलाफ़ करते थे तुम	92
لَجَعَلَكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَلَكِنْ يُضِلُّ مَنْ يَشَاءُ						
तो अलबत्ता बना देता तुम्हें	एक उम्मत	और लेकिन	गुमराह करता है	जिसे वह चाहता है		
وَيَهْدِي مَنْ يَشَاءُ وَلِئُسَلِّنَ عَمَّا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٩٣﴾						
और हिदायत देता है	जिस को वह चाहता है	और तुम से ज़रूर पूछा जाएगा	उस की वाबत	तुम करते थे	93	

وَلَا تَتَّخِذُوا أَيْمَانَكُمْ دَخَلًا بَيْنَكُمْ فَتَزِلَّ قَدَمٌ					
कोई कदम	कि फिसले	अपने दरमियान	दखल का बहाना	अपनी कस्में	और तुम न बनाओ
بَعْدَ ثُبُوتِهَا وَتَذُوقُوا السُّوَاءَ بِمَا صَدَدْتُمْ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ					
अल्लाह का रास्ता	से	रोका तुम ने	इस लिए कि	बुराई (बवाल)	और तुम चखो अपने जम जाने के बाद
وَلَكُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ (९४) وَلَا تَشْتَرُوا بِعَهْدِ اللَّهِ ثَمَنًا قَلِيلًا					
थोड़ा	मोल	अल्लाह के अहद के बदले	और तुम न लो	94	बड़ा अज़ाब और तुम्हारे लिए
إِنَّمَا عِنْدَ اللَّهِ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ (९५) مَا عِنْدَكُمْ					
जो तुम्हारे पास	95	तुम जानो	अगर	तुम्हारे लिए	बेहतर वही अल्लाह के हाँ वेशक जो
يَنْفَعُ وَمَا عِنْدَ اللَّهِ بَاقٍ وَلَنَجْزِيَنَّ الَّذِينَ صَبَرُوا					
उन्होंने ने सबर किया	वह लोग जो	और हम ज़रूर देंगे	बाकी रहने वाला	अल्लाह के पास	और जो ख़तम हो जाता है
أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ (९६) مَنْ عَمِلَ صَالِحًا					
कोई नेक	अमल किया	जो - जिस	96	वह करते थे	जो उस से बेहतर उन का अजर
مِّنْ ذَكَرٍ أَوْ أُنْثَىٰ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهٗ حَيٰوةً طَيِّبَةً					
पाकीज़ा	ज़िन्दगी	तो हम उसे ज़रूर ज़िन्दगी देंगे	मोमिन	जबकि वह	औरत या मर्द हो
وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ (९७) فَإِذَا					
पस जब	97	वह करते थे	जो	उस से बहुत बेहतर	उन का अजर और हम ज़रूर उन्हें देंगे
قَرَأَتِ الْقُرْآنَ فَأَتَعَدُّ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ (९८)					
98	मर्दूद	शैतान	से	अल्लाह की	तो पनाह लो कुरआन तुम पढ़ो
إِنَّهُ لَيْسَ لَهُ سُلْطٰنٌ عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ					
और अपने रब पर	ईमान लाए	वह लोग जो	पर	कोई ज़ोर	उस के लिए नहीं वेशक वह
يَتَوَكَّلُونَ (९९) إِنَّمَا سُلْطٰنُهُ عَلَى الَّذِينَ يَتَوَلَّوْنَهُ وَالَّذِينَ					
और वह लोग जो	उस को दोस्त बनाते हैं	वह लोग जो	पर	उस का ज़ोर	इस के सिवा नहीं 99 वह भरोसा करते हैं
هُم بِهِ مُشْرِكُونَ (१००) وَإِذَا بَدَّلْنَا آيَةً مَّكَانَ آيَةٍ وَاللَّهُ					
और अल्लाह	दूसरा हुक्म	जगह	कोई हुक्म	हम बदलते हैं	और जब 100 शरीक ठहराते हैं उस (अल्लाह) के साथ वह
أَعْلَمُ بِمَا يُنَزِّلُ قَالُوا إِنَّمَا أَنْتَ مُفْتَرٍ بَلْ أَكْثَرُهُمْ					
उन में अक्सर	बल्कि	तुम घड़ लेते हो	तू	इस के सिवा नहीं	वह कहते हैं वह नाज़िल करता है उस को खूब जानता है
لَا يَعْلَمُونَ (१०१) قُلْ نَزَّلَهُ رُوحُ الْقُدُسِ مِنْ رَبِّكَ بِالْحَقِّ					
हक के साथ	तुम्हारा रब	से	रुहुल कुदुस (जिब्राईल अ)	इसे उतारा है	आप (स) कहें 101 इल्म नहीं रखते
لِيُثَبِّتَ الَّذِينَ آمَنُوا وَهُدًى وَبُشْرَىٰ لِلْمُسْلِمِينَ (१०२)					
102	मुसलमानों के लिए	और खुशख़बरी	और हिदायत	ईमान लाए (मोमिन)	वह लोग जो ताकि साबित कदम करे

और अपनी कसमों को न बनाओ अपने दरमियान दखल का बहाना कि कोई कदम अपने जम जाने के बाद फिसल जाए और तुम उस के नतीजे में बवाल चखो कि तुम ने रोका अल्लाह के रास्ते से, और तुम्हारे लिए बड़ा अज़ाब है। (94) और तुम अल्लाह के अहद के बदले न लो थोड़ा मोल (माले दुनिया) वेशक जो अल्लाह के पास है वह (हमेशा) बाकी रहने वाला है। अगर तुम जानो तो वही तुम्हारे लिए बेहतर है। (95) जो तुम्हारे पास है वह ख़तम होजाता है और जो अल्लाह के पास है वह (हमेशा) बाकी रहने वाला है। और जिन लोगों ने सबर किया हम ज़रूर उन्हें उन का अजर देंगे उस से बहुत बेहतर जो वह (आमाल) करते थे। (96) जिस ने कोई नेक अमल किया वह मर्द हो या औरत, जब कि हो वह मोमिन, तो हम ज़रूर उसे (दुनिया में) पाकीज़ा ज़िन्दगी देंगे और (आखिरत) में उन का अगर ज़रूर उस से बेहतर देंगे, जो (आमाल) वह करते थे। (97) पस जब तुम कुरआन पढ़ो तो अल्लाह की पनाह लो शैतान मर्दूद से। (98) वेशक उस का कोई ज़ोर नहीं उन लोगों पर जो ईमान लाए और वह अपने रब पर भरोसा करते हैं। (99) इस के सिवा नहीं कि उस का ज़ोर उन लोगों पर है जो उस को दोस्त बनाते हैं और जो लोग अल्लाह के साथ शरीक ठहराते हैं। (100) और जब हम कोई हुक्म किसी दूसरे हुक्म की जगह बदलते हैं, और अल्लाह खूब जानता है जो वह नाज़िल करता है, वह (काफ़िर) कहते हैं इस के सिवा नहीं कि तुम (खुद) घड़ लेते हो, (नहीं) बल्कि उन में अक्सर इल्म नहीं रखते। (101) आप (स) कह दें कि उसे जिब्राइल (अ) अमीन ने तुम्हारे रब की तरफ़ से उतारा है हक के साथ ताकि मोमिनों को साबित कदम रखे, और मुसलमानों के लिए हिदायत ओ खुशख़बरी है। (102)

और हम खूब जानते हैं कि वह कहते हैं कि इस के सिवा नहीं कि उसे एक आदमी सिखाता है, जिस की तरफ वह निसबत करते हैं उस की ज़बान अज़मी (ग़ैर अरबी) है, और यह वाज़ेह अरबी ज़बान है। (103)

वेशक जो लोग ईमान नहीं लाते अल्लाह की आयतों पर, अल्लाह उन्हें हिदायत नहीं देता, और उन के लिए दर्दनाक अज़ाब है। (104)

इस के सिवा नहीं कि वही लोग झूट बुहतान बान्धते हैं जो अल्लाह की आयतों पर ईमान नहीं रखते, और वही लोग झूटे हैं। (105)

जो अल्लाह का मुन्किर हुआ उस (अल्लाह) पर ईमान के बाद, सिवाए उस के जो मजबूर किया गया हो, जब कि उस का दिल ईमान पर मुत्तमइन हो, बल्कि जो कुफ़ के लिए सीना कुशादा करे (मन मरज़ी से कुफ़ करे) तो उन पर अल्लाह का ग़ज़ब है, और उन के लिए बड़ा अज़ाब है। (106)

यह इस लिए है कि उन्होंने ने दुनिया की जिन्दगी को आखिरत पर पसन्द किया, और यह कि अल्लाह हिदायत नहीं देता काफ़िर लोगों को। (107)

यही लोग हैं अल्लाह ने मुहर लगादी है जिन के दिलों पर, और उन के कानों पर, और उन की आँखों पर, और यही लोग गाफ़िल हैं। (108)

कुछ शक नहीं कि यही लोग आखिरत में ख़सरा (नुक्सान) उठाने वाले हैं। (109)

फिर वेशक तुम्हारा रब उन लोगों के लिए जिन्होंने ने हिज़्रत की, उस के बाद कि वह सताए गए और फिर उन्होंने ने जिहाद किया, और सब्र किया, वेशक तुम्हारा रब उस के बाद बख़्शने वाला निहायत मेहरबान है। (110)

जिस दिन हर शख्स अपनी (ही) तरफ़ से झगड़ा करता आएगा, और हर शख्स को पूरा दिया जाएगा जो उस ने किया और उन पर जुल्म न किया जाएगा। (111)

وَلَقَدْ نَعْلَمُ أَنَّهُمْ يَقُولُونَ إِنَّمَا يُعَلِّمُهُ بَشَرٌ لِّسَانُ الَّذِي

वह जो कि	ज़बान	एक आदमी	उस को सिखाता है	इस के सिवा नहीं	वह कहते हैं	कि वह	और हम खूब जानते हैं
----------	-------	---------	-----------------	-----------------	-------------	-------	---------------------

يُلْحِدُونَ إِلَيْهِ أَعْجَمِيٌّ وَهَذَا لِسَانٌ عَرَبِيٌّ مُّبِينٌ ﴿١٠٣﴾

103	वाज़ेह	अरबी	ज़बान	और यह	अज़मी	उस की तरफ़	कजराही (निस्वत) करते हैं
-----	--------	------	-------	-------	-------	------------	--------------------------

إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ لَا يَهْدِيهِمُ اللَّهُ وَلَهُمْ

और उन के लिए	अल्लाह	हिदायत नहीं देता	अल्लाह की आयतों पर	ईमान नहीं लाते	वह लोग जो	वेशक
--------------	--------	------------------	--------------------	----------------	-----------	------

عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٠٤﴾ إِنَّمَا يَفْتَرِي الْكَذِبَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ

जो ईमान नहीं लाते	वह लोग	झूट	बुहतान बान्धता है	इस के सिवा नहीं	104	दर्दनाक अज़ाब
-------------------	--------	-----	-------------------	-----------------	-----	---------------

بِآيَاتِ اللَّهِ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْكَذِبُونَ ﴿١٠٥﴾ مَنْ كَفَرَ بِاللَّهِ مِنْ بَعْدِ

वाद	अल्लाह का	मुनकिर हुआ	जो	105	झूटे	वह	और यही लोग	अल्लाह की आयतों पर
-----	-----------	------------	----	-----	------	----	------------	--------------------

إِيمَانَةٍ إِلَّا مَنْ أَكْرَهَ وَقَلْبُهُ مُطْمَئِنٌّ بِالْإِيمَانِ وَلَكِنْ

और लेकिन (बल्कि)	ईमान पर	मुत्मइन	जब कि उस का दिल	मजबूर किया गया	जो	सिवाए	उस के ईमान
------------------	---------	---------	-----------------	----------------	----	-------	------------

مَنْ شَرَحَ بِالْكَفْرِ صَدْرًا فَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ مِّنَ اللَّهِ وَلَهُمْ

और उन के लिए	अल्लाह का	ग़ज़ब	तो उन पर	सीना	कुफ़्र के लिए	कुशादा करे	जो
--------------	-----------	-------	----------	------	---------------	------------	----

عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿١٠٦﴾ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ اسْتَحْبَبُوا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا

दुनिया की ज़िन्दगी	उन्होंने पसन्द किया	इस लिए कि वह	यह	106	बड़ा अज़ाब
--------------------	---------------------	--------------	----	-----	------------

عَلَى الْآخِرَةِ ۚ وَأَنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ﴿١٠٧﴾

107	काफ़िर (जमा)	लोग	हिदायत नहीं देता	अल्लाह	और यह कि	आख़िरत	पर
-----	--------------	-----	------------------	--------	----------	--------	----

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ طَبَعَ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ وَسَمِعَهُمْ وَأَبْصَارَهُمْ ۚ

और उन की आँख	और उन के कान	उन के दिल	पर	अल्लाह ने सुहर लगादी	वह जो कि	यही लोग
--------------	--------------	-----------	----	----------------------	----------	---------

وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْغَافِلُونَ ﴿١٠٨﴾ لَا جَرَمَ أَنَّهُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمْ

वह	आख़िरत में	कि वह	कुछ शक नहीं	108	गाफ़िल (जमा)	वह	और यही लोग
----	------------	-------	-------------	-----	--------------	----	------------

الْخَسِرُونَ ﴿١٠٩﴾ ثُمَّ إِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِينَ هَاجَرُوا مِنْ بَعْدِ

उस के बाद	उन्होंने हिज़्रत की	उन लोगों के लिए	तुम्हारा रब	वेशक	फिर	109	खसारा उठाने वाले
-----------	---------------------	-----------------	-------------	------	-----	-----	------------------

مَا فُتِنُوا ثُمَّ جَاهِدُوا وَصَبَرُوا ۚ إِنَّ رَبَّكَ مِنْ بَعْدِهَا

उस के बाद	तुम्हारा रब	वेशक	उन्होंने ने सबर किया	उन्होंने ने जिहाद किया	फिर	सताए गए	कि
-----------	-------------	------	----------------------	------------------------	-----	---------	----

لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١١٠﴾ يَوْمَ تَأْتِي كُلُّ نَفْسٍ تُجَادِلُ عَنْ

से	झगड़ा करता	शख्स	हर	आएगा	जिस दिन	110	निहायत मेहरबान	अलबल्ला बख़शने वाला
----	------------	------	----	------	---------	-----	----------------	---------------------

نَفْسِهَا وَتُؤَفَّقُ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿١١١﴾

111	जुल्म न किए जाएंगे	और वह	उस ने किया	जो	शख्स	हर	और पूरा दिया जाएगा	अपनी तरफ़
-----	--------------------	-------	------------	----	------	----	--------------------	-----------

وَصَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا قَرْيَةً كَانَتْ آمِنَةً مُطْمَئِنَّةً					
मुत्मइन	वेखौफ़	वह थी	एक बस्ती	एक मिसाल	और बयान की अल्लाह ने
يَأْتِيهَا رِزْقُهَا رَغَدًا مِّنْ كُلِّ مَكَانٍ فَكَفَرَتْ بِأَنْعُمِ					
नेमतों से	फिर उस ने नाशुक्री की	हर जगह	से	बाफरागत	उस का रिज़्क
اللَّهُ فَادَّاقَهَا اللَّهُ لِبَاسِ الْجُوعِ وَالْخَوْفِ بِمَا					
उस के बदले जो	और खौफ़	भूक	लिबास	अल्लाह	तो चखाया उस को
كَانُوا يَصْنَعُونَ ﴿١١٢﴾ وَلَقَدْ جَاءَهُمْ رَسُولٌ مِّنْهُمْ فَكَذَّبُوهُ					
सो उन्होंने ने उसे झुटलाया	उन में से	एक रसूल	और वेशक उन के पास आया	112	वह करते थे
فَاَخَذَهُمُ الْعَذَابُ وَهُمْ ظَالِمُونَ ﴿١١٣﴾ فَكُلُوا مِمَّا					
उस से जो	पस तुम खाओ	113	ज़ालिम (जमा)	और वह	अज़ाब
رَزَقَكُمُ اللَّهُ حَلَالًا طَيِّبًا وَاشْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ إِنَّ					
अगर	अल्लाह की नेमत	और शुक्र करो	पाक	हलाल	तुम्हें दिया अल्लाह ने
كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُونَ ﴿١١٤﴾ اِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ					
मुर्दार	तुम पर	हराम किया	इस के सिवा नहीं	114	तुम इबादत करते हो
وَالْدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنْزِيرِ وَمَا اُهِلَّ لِغَيْرِ اللَّهِ بِهِ فَمَنِ					
पस जो	उस पर	अल्लाह के अलावा	पुकारा जाए	और जो	और खिनज़ीर का गोश्त
اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَلَا عَادٍ فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١١٥﴾					
115	निहायत मेहरबान	बख़शने वाला	तो वेशक अल्लाह	और न हद से बढ़ने वाला	न सरकशी करने वाला
وَلَا تَقُولُوا لِمَا تَصِفُ أَلْسِنَتُكُمُ الْكَذِبَ هَذَا					
यह	झूट	तुम्हारी ज़बानें	बयान करती है	वह जो	और तुम न कहो
حَلَالٌ وَهَذَا حَرَامٌ لِّتَفْتَرُوا عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ إِنَّ					
वेशक	झूट	अल्लाह	पर	कि बुहतान बान्धो	हराम
الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُونَ ﴿١١٦﴾					
116	फ़लाह न पाएंगे	झूट	अल्लाह	पर	बुहतान बान्धते हैं
مَتَاعٌ قَلِيلٌ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١١٧﴾ وَعَلَى					
और पर	117	दर्दनाक	अज़ाब	और उन के लिए	थोड़ा
الَّذِينَ هَادُوا حَرَّمْنَا مَا قَصَصْنَا عَلَيْكَ مِنْ قَبْلَ					
इस से कब्ल	तुम पर (से)	जो हम ने बयान किया	हम ने हराम किया	जो लोग यहूदी हुए (यहूदी)	
وَمَا ظَلَمْنَاهُمْ وَلَكِنْ كَانُوا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿١١٨﴾					
118	जुल्म करते	अपने ऊपर	वह थे	बल्कि	और नहीं हम ने जुल्म किया उन पर

और अल्लाह ने एक बस्ती की मिसाल बयान की, वह मुत्मइन वेखौफ़ थी, हर जगह से उस के पास रिज़्क बाफरागत आ जाता था, फिर उस ने नाशुक्री की, अल्लाह की नेमतों की, तो अल्लाह ने उस के बदले जो वह करते थे उसको भूक और खौफ़ के लिबास का मज़ा चखाया (भूक और खौफ़ उनका लिबादा बन गया)। (112) और वेशक उन के पास उन ही में से एक रसूल आया, सो उन्होंने ने उसे झुटलाया, तो अज़ाब ने उन्हें आ पकड़ा और वह ज़ालिम थे। (113) पस जो अल्लाह ने तुम्हें दिया है उस में से हलाल और पाक खाओ, और अल्लाह की नेमत का शुक्र करो, अगर तुम उस की इबादत करते हो। (114) उस के सिवा नहीं कि अल्लाह ने तुम पर हराम किया है मुर्दार और खून, और खिनज़ीर का गोश्त और जिस पर अल्लाह के अलावा (किसी और) का नाम पुकारा जाए, पस जो लाचार हो जाए न सरकशी करने वाला हो, और न हद से बढ़ने वाला तो वेशक अल्लाह बख़शने वाला निहायत मेहरबान है। (115) और न कहो तुम वह जो तुम्हारी ज़बानें झूट बयान करती हैं कि यह हलाल है और यह हराम, कि तुम अल्लाह पर झूट बुहतान बान्धो, वेशक जो लोग अल्लाह पर झूट बुहतान बान्धते हैं वह फ़लाह (दो ज़हान में कामयाबी) न पाएंगे। (116) (उन के लिए) फ़ाइदा थोड़ा है, और उन के लिए अज़ाब दर्दनाक है। (117) और यहूदियों पर हम ने हराम किया था जो उस से कब्ल हम ने तुम से बयान किया है, और हम ने उन पर जुल्म नहीं किया, बल्कि वह अपने ऊपर जुल्म करते थे। (118)

फिर वेशक तुम्हारा रब उन लोगों के लिए जिन्होंने ने नादानी से बुरे अमल किए, फिर उस के बाद उन्होंने ने तौबा की और इसलाह कर ली, वेशक तुम्हारा रब उस के बाद बख्शने वाला, निहायत मेहरवान है। (119)

वेशक इब्राहीम (अ) इमाम थे, अल्लाह के फरमावरदार, यक रख (सब को छोड़ कर एक अल्लाह के हो रहने वाले) और वह मुश्रिकों में से न थे, (120)

उस की नेमतों के शुक्रगुज़ार, उस (अल्लाह ने) उन्हें चुन लिया, और उन की रहनुमाई की सीधी राह की तरफ। (121)

और हम ने उन्हें दुनिया में भलाई दी, और वेशक वह आखिरत में नेकोकारों में से है, (122)

फिर हम ने तुम्हारी तरफ वहि भेजी कि हर एक से जुदा हो रहने वाले (यक रख) इब्राहीम (अ) की पैरवी करो और वह मुश्रिकों में से न थे। (123)

इस के सिवा नहीं कि हफ़ता उन लोगों पर (अज़मत का दिन) मुकर्रर किया गया जिन्होंने ने उस में इख़्तिलाफ़ किया था, और वेशक तुम्हारा रब अलबत्ता क़ियामत के दिन उन के दरमियान उस (बात) में फ़ैसला कर देगा जिस में वह इख़्तिलाफ़ करते थे। (124)

तुम अपने रब के रास्ते की तरफ बुलाओ दानाई से, और अच्छी नसीहत से, और उन से ऐसे वहस करो जो सब से बेहतर हो, वेशक तुम्हारा रब उस को खूब जानने वाला है जो अल्लाह के रास्ते से गुमराह हुआ, और वह राह पाने वालों को खूब जानने वाला है। (125)

और अगर तुम तकलीफ़ दो तो ऐसी ही तकलीफ़ दो, जैसी तुम्हें तकलीफ़ दी गई थी, और अगर तुम सब्र करो तो यह सब्र करने वालों के लिए बेहतर है। (126)

और सब्र करो और तुम्हारा सब्र अल्लाह ही की मदद से है। और गुम न खाओ उन पर, और वह जो फ़रेब करते हैं उस से तंगी में (दिल तंग) न हो। (127)

वेशक अल्लाह उन लोगो के साथ है जिन्होंने ने परहेज़गारी की, और वह लोग जो नेकोकार हैं। (128)

ثُمَّ إِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِينَ عَمِلُوا الشُّوْءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابُوا									
उन्होंने ने तौबा की	फिर	नादानी से	बुरे	अमल किए	उन लोगों के लिए जो	तुम्हारा रब	वेशक	फिर	
مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ وَأَصْلَحُوا إِنَّ رَبَّكَ مِنْ بَعْدِهَا لَغَفُورٌ رَحِيمٌ (119)									
119	निहायत मेहरवान	बख़्शने वाला	उस के बाद	तुम्हारा रब	वेशक	और उन्होंने ने इसलाह की	उस के बाद		
إِنَّ إِبْرَاهِيمَ كَانَ أُمَّةً قَانِتًا لِلَّهِ حَنِيفًا وَلَمْ يَكُ مِنَ									
से	और न थे	यक रख	अल्लाह के	फरमावरदार	एक जमाअत (इमाम)	थे	इब्राहीम (अ)	वेशक	
الْمُشْرِكِينَ (120) شَاكِرًا لِّأَنْعَمِهِ اجْتَبَاهُ وَهَدَاهُ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ (121)									
121	सीधी राह	तरफ	और उस की रहनुमाई की	उस ने उसे चुन लिया	उस की नेमतों के लिए	शुक्र गुज़ार	120	मुश्रिक (जमा)	
وَاتَيْنَاهُ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَإِنَّهُ فِي الْآخِرَةِ لَمِنَ									
अलबत्ता - से	आखिरत में		और वेशक वह	भलाई	दुनिया में		और उस को दी हम ने		
الضَّالِّحِينَ (122) ثُمَّ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ أَنْ اتَّبِعْ مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا									
यक रख	इब्राहीम (अ)	दीन	पैरवी करो तुम	कि	तुम्हारी तरफ	वहि भेजी हम ने	फिर	122	नेकोकार (जमा)
وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ (123) إِنَّمَا جُعِلَ السَّبْتُ عَلَى الَّذِينَ									
वह लोग जो	पर	हफ़ते का दिन	मुकर्रर किया गया	उस के सिवा नहीं	123	मुश्रिक (जमा)	से	और न थे वह	
اِخْتَلَفُوا فِيهِ وَإِنَّ رَبَّكَ لَيَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ فِيمَا									
उस में जो	रोज़े क़ियामत		उन के दरमियान	अलबत्ता फ़ैसला करेगा	तुम्हारा रब	और वेशक	उस में	उन्होंने ने इख़्तिलाफ़ किया	
كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ (124) أَدْعُ إِلَى سَبِيلِ رَبِّكَ بِالْحُكْمَةِ									
हिक्मत (दानाई) से	अपना रब	रास्ता	तरफ	तुम बुलाओ	124	इख़्तिलाफ़ करते	उस में	वह थे	
وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَجَادِلْهُمْ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ إِنَّ									
वेशक	सब से बेहतर	वह	ऐसे जो	और वहस करो उन से		अच्छी	और नसीहत		
رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيلِهِ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ (125)									
125	राह पाने वालों को	खूब जानने वाला	और वह	उस का रास्ता	से	गुमराह हुआ	उस को जो	खूब जानने वाला वह	तुम्हारा रब
وَأَنْ عَاقِبْتُمْ فَعَاقِبُوا بِمِثْلِ مَا عُوقِبْتُمْ بِهِ وَلَئِنْ									
और अगर	उस से	जो तुम्हें तकलीफ़ दी गई		ऐसी ही	तो उन्हें तकलीफ़ दो		तुम तकलीफ़ दो	और अगर	
صَبْرْتُمْ لَهُوَ خَيْرٌ لِّلصَّابِرِينَ (126) وَاصْبِرْ وَمَا صَبْرُكَ إِلَّا بِاللَّهِ									
अल्लाह की मदद से	मगर	तुम्हारा सब्र	और नहीं	और सब्र करो	126	सब्र करने वालों के लिए	बेहतर	तो वह	तुम सब्र करो
وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُ فِي ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُونَ (127)									
127	वह फरेब करते हैं	उस से जो	तंगी	में	और न हो	उन पर	और गुम न खाओ		
إِنَّ اللَّهَ مَعَ الَّذِينَ اتَّقَوْا وَالَّذِينَ هُمْ مُحْسِنُونَ (128)									
128	नेकोकार (जमा)	वह	और वह लोग जो	उन्होंने ने परहेज़गारी की	वह लोग जो	साथ	वेशक अल्लाह		

१५
१६

१६
१७